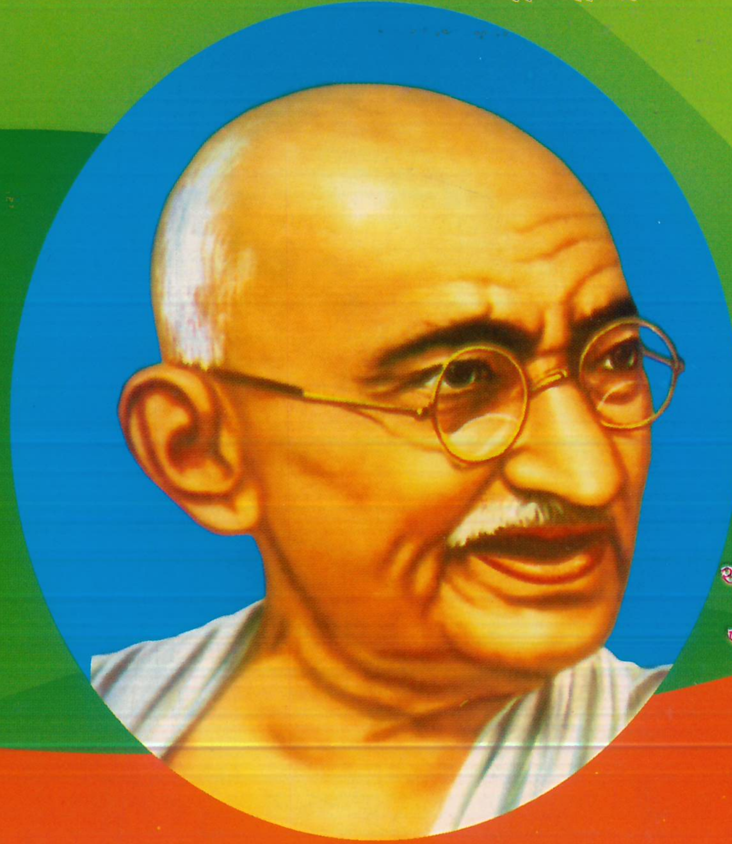
मैथिली

𑒧𑓀𑒑𑒪-𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒞

मंगल-प्रभात

गान्धीजी



रघुपति राघव
राजा राम
पतित पावन
सीताराम



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद-१४

गाँधीजी की छलाह ?

अमर छलाह, मरिओ क घर-घर व्याप्त छथि । अवतार छलाह, तँ ने मूर्ति पूजित ओ नाम जपित होइछ । समुद्रमे बुड़ैत वैदिक सभ्यताक उद्धारक, स्वराज्यक अमृतमन्थनक हेतु कर्मठ कमठ, युद्धत्रस्त भूगोलक शान्तिक अवलम्ब कै पुनरुद्धारक, साम्राज्यवादक हृदयविदारक, हरिजनक हेतु भिक्षुक वामन, विदेशी सत्ताकेँ निश्छत्र कैनिहार, मर्यादा-पुरुषोत्तम, गीतागायक, हिंसाक निरोधक ओ कलिक ध्वंसक-कोन अंशेँ ओ अवतारी नहि कहल जैताह ? पैगम्बर छलाह, तँ ने इसाइ ओ मुसल्मान सभ हुनक वन्दना करैछ । बुद्धवत् अहिंसाक मन्त्र देल । ईसाक समान शान्तिक हेतु मरलाह । मुहम्मद जकाँ हुनक मत हुनका समक्षहि सर्वत्र पसरि गेल । पक्का हिन्दू छलाह-जेँ निषेकादि स्मशानान्त वैदिक विधिसँ संस्कार भेल । सार्थक मुसल्मान, तँ मुसल्मानक हित-चिन्तना करैत मृत्यु अपनौल । ब्राह्मण जकाँ नित्यप्रति सन्ध्यावन्दन कैल । क्षत्रिय बनि सत्याग्रह-संग्राममे जीवन भरि लड़लाह । वैश्य तँ छलाहे, राष्ट्रकेँ व्यवसाय ओ मितव्ययिताक आदर्श सिखौल । शूद्र, तँ सेवाक धर्म ग्रहण कैल । अन्त्यज, तँ भङ्गीक संग वास कैल। सम्राट् छलाह जनिकाँ राजा-महाराज माथ झुकबैत छलाह । दरिद्रनारायण, तँ अर्धनग्न ! वृद्धवत् उपदेशक, युवकवत् सदा संघर्ष लै प्रस्तुत, बालक जकाँ स्वच्छ सरल ओ स्मितमुख ! भक्त छलाह, राम नामक महिमा सुना गेलाह । सन्त छलाह, उपकारमे जीवन आहुत कै देल । नेता छलाह, पराधीन देशकेँ स्वाधीन बना देल । त्राता छलाह, युग-युगक दलित-पतितकेँ पावन कै देल । पुरुष नहि पुरुषोत्तम छलाह, आत्मा नहि महात्मा छलाह । युगनिर्मित नहि युगनिर्माता छलाह । एक शब्दमे पूछी तँ–

गाँधीजी की नहि छलाह ?

आन सभ अवतार आततायी सभक दमन कै शान्ति स्थापित कैलन्हि किन्तु गाँधीजी आततायी सभक आततायित्वकेँ मेटाय ओकरा हृदयमे सद्भावना जागृत कै शान्ति स्थापनाक प्रयत्न कैलन्हि ओ सफलो भेलाह ।

–राजसूय यज्ञमे श्रीकृष्ण भगवान्क पूजा होइत देखि शिशुपाल विरोध कैने छल किन्तु महात्मा गाँधीक पूजाकेँ आइ धरि केओ विरोध नहि कैलक ।

–संसारमे जतेक पैगम्बर भेलाह से सभ अपन जातिक उन्नतिक हेतु कार्य कैलन्हि किन्तु गाँधीजी संसारक सभ जातिकेँ समान दृष्टिसँ देखलन्हि।

(लगातार कॉभर पृष्ठ 3 पर)

मंगल-प्रभात

गाँधीजी

हिन्दी अनुवादक

अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी

मैथिली अनुवाद

डा. योगानन्दझा

जे वस्तु आत्माक धर्म थिक, मुदा अज्ञान किंवा दोसर कारणे आत्माकेँ जकर बोध नहि रहलैक, तकर पालनक हेतु व्रत लेबाक आवश्यकता होइत छैक ।



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

कबिलपुर, लहेरियासराय

दरभंगा-846001

Mangal-Prabhat (Collection of elucidations on philosophical thoughts of Karam Chand Gandhi, the father of Modern India, translated into Maithili by Dr. Yoganand Jha, Kabilpur, Laheriasarai, Darbhanga-846001 (Bihar) from Hindi translation by Amrit Lal Thakor Das Nanavati, 2013, Rs. 60.00

❖ प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा

❖ प्रथम संस्करण : 2013

❖ मूल्य : 60.00 (साठि) टाका मात्र

❖ आवरण शिल्प : कीर्त्तिझा

❖ टाइपसेटिंग : **शैल प्रिन्टर्स**
जी.एन. गंज, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मो.-09334933023

❖ निधि-व्यवस्था : श्रीमिलिन्दकुमारझा

❖ मुद्रक : सुधीर प्रिंटिंग वर्क्स
राजेन्द्रनगर, पटना-16
दूरभाष: 0612-2687897

मंगल-प्रभात

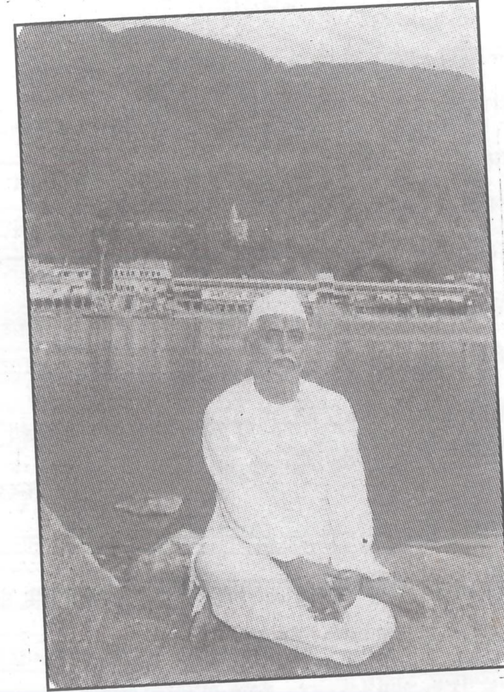
साबरमती आश्रममे भोर-साँझ प्रार्थना सभा होइत छल । आत्मशुद्धिक हेतु गान्धीजी एहि आश्रममे एकादश व्रतक पठन आरम्भ करौलनि। विनम्र व्रतनिष्ठापूर्वक ई एकादश व्रत सेव्य छल-

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य असंग्रह
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन
सर्वधर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना

एकरे सभक व्याख्या थिक - **मंगल प्रभात**

गान्धी दर्शन

समर्पण



पं. सतीशचन्द्रझा

ॐ अद्य आश्विने मासि कृष्णे पक्षे
दशम्यां तिथौ वत्स गोत्रस्य श्वसुरः
सतीशचन्द्र शर्मा तृप्यतामिदं
मैथिली रूपान्तर कार्यं
तस्मै स्वधा

10.10.2012 इसवी
सप्तम स्मृति दिवस

योगानन्दझा
मो.-09334493330

मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-846001 द्वारा प्रकाशित किछु प्रमुख पोथीक सूची

1.	मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य	निबन्ध	डा. रामदेवझा	2002
2.	आलेख सञ्चयन	निबन्ध	डा. योगानन्दझा	2002
3.	मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष	निबन्ध	डा. योगानन्दझा	2006
4.	चन्दाझा ओ लालदासक रामायणक तुलनात्मक अध्ययन	शोधग्रन्थ	डा.मुरलीधरझा	2006
5.	लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा	निबन्ध	डा. योगानन्दझा	2007
6.	आधुनिक मैथिली नाटकक वैशिष्ट्य ओ विकास	शोधग्रन्थ	डा. श्रीशंकरझा	2007
7.	गहबर-गीत	निबन्ध	डा. योगानन्दझा	2007
8.	मोनक औनाहटि	कथा संग्रह	डा.धीरेन्द्रनाथमिश्र	2008
9.	आचार्य सुरेन्द्रझा सुमनक गद्य-गरिमा	शोध-ग्रन्थ	डा. सावित्री झा	2008
10.	भारती	उपन्यास	डा. वीणा ठाकुर	2009
11.	मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दाबली	शोध-ग्रन्थ	डा. योगानन्दझा	2009
12.	चन्द्रनाथमिश्र' अमर'क साहित्यमे हास्य व्यंग्य	शोध-ग्रन्थ	डा. भाग्यनारायणझा	2009
13.	हमरो लेने चलू	कथासंग्रह	श्रीअमरनाथचौधरी	2010
14.	वाणिनी	निबन्ध	प्रो. वीणा ठाकुर	2010
15.	म.म. परमेश्वरझा कृत सीमन्तिनी-आख्यायिका	दीर्घ कथा	स. डा. रामदेवझा	2011
16.	मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली	शोध-ग्रन्थ	डा. ललिता झा	2011
17.	स. जीवति गुणा यस्य	जीवनी	डा. शंकरदेवझा	2011
18.	नेपालक मैथिली नाट्य परम्परा	शोधग्रन्थ	डा. कुलानन्दझा	2011
19.	मैथिली शाक्त साहित्य	शोधग्रन्थ	डा. भोलाझा	2012

आशीर्वचन

अहिंसा परमो धर्म: कैं अपनाय, सत्ताकैं त्यागि मारि अपन सिद्धान्तकैं संसार भरि प्रसारित कऽ महात्मा बुद्ध बौद्ध धर्मक प्रवर्त्तक बनलाह। महात्मा बुद्धक बाद महात्मा गान्धीए दोसर अवतारी पुरुष भऽ भारतवर्षक धराधाम पर अवतीर्ण भेलाह जे सत्य ओ अहिंसाकैं हथियार बनाय, एकर राजनीतिक प्रयोग कऽ विदेशीक हाथमे गेल सत्ताकैं स्वदेशीक हाथमे हस्तान्तरित करबामे सफल भेलाह।

सर्व विदित अछि जे महात्मा गान्धीक पदार्पणसँ पहिनहि कांग्रेस नरम दल आ गरम दल रूपमे विभाजित भऽ चुकल छल। स्वाधीनता प्राप्तिमे गरम दलक अनुयायी लोकनिक बलिदानोकैं नकारब सत्यक अपलाप मानल जायत। यद्यपि केवल सशस्त्र क्रान्तिसँ ई उपलब्धि संभव नहि छल। महात्मा गान्धी शान्ति तथा गरम दल क्रान्ति एहि दुनूकैं समाने श्रेय छैक।

महात्मा गान्धी शान्तिमय संघर्ष हेतु दोसर अस्त्र अनशनकैं बनौलनि। ईहो अस्त्र पुराने छलनि। हितोपदेशक 'मित्रलाभ' शीर्षक अध्यायमे हिरण्यक नामक मूसक बीहरि लग जाय लघुपतनक नामक कौआ जखन मैत्रीक प्रस्ताव रखलकैं तँ हिरण्यक - 'भक्ष्य भक्षकयो: प्रीति: विपत्तेरेव कारणम्' कहि अस्वीकार क देलकै। तखन लघुपतनकक उक्ति छलै - 'अनाहारेण तव द्वारि आत्मानं व्यापादयिष्यामि' अर्थात् जँ अहाँ मित्रता नहि स्वीकारब तँ अनशन कऽ अहाँक द्वार पर प्राणत्याग देब। वस्तुत: अंग्रेज शासकक भारत तँ भक्ष्ये छलैक, तथापि गान्धीजी

अनशनकेँ अस्त्र बनौलनि। ई आत्मबल आहि नियमक पालनसँ प्राप्त कऽ सकबाह, तकर विवरण एहि मंगल प्रभातमे संचित कयने छथि। एहन अमृतमय वाणीक मैथिली रूपान्तर मैथिली भाषी समाजकेँ डॉ. श्री योगानन्द झा अर्पित कऽ रहल छथि तेँ अशेष साधुवाद प्राप्त करबाक अधिकारी छथि।

एक योगाबाबू (भलमानुस उपन्यासक प्रणेता) गान्धीजीक 'सत्यक प्रयोग'केँ मैथिली रूपान्तर कऽ मैथिली भाषीकेँ अनुपम सन्देश दऽ चुकल छलाह, ई अपर श्री योगाजी ओहि गूढ़ रहस्यक अनुवाद कऽ मातृभाषाक श्रीवृद्धि कयलनि अछि। हिनका अशेष आशीर्वाद दैत अपनाकेँ कृतार्थ मानि रहल छी।

फाल्गुनी पूर्णिमा
२६.३.२०१३

— श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
आदित्य सदन
मिश्रटोला, दरभंगा, ८४६००४

महात्माक माहात्म्य : अल्पारम्भः क्षेमकरः

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्रामक अन्तिम तीन दशकक इतिहासमे मोहनदास करमचन्द गान्धी अर्थात् महात्मा गान्धीक सर्वोच्च स्थान छनि। गान्धीजीक जीवनमे, स्वतन्त्रता संग्रामक इतिहासमे, दासताक बेड़ीमे आबद्ध बहुतो देशक पीड़ित मानव-समुदायक हेतु सत्याग्रह सन मुक्ति-महास्त्रक आविष्कारक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे, चम्पारणक स्थान विशिष्टतम अछि।

'कौशिकींतु समारभ्य गण्डकीमधिगम्यवै' तथा 'गङ्गा हिमवतोर्मध्ये' स्थित मिथिलाक उत्तर-पश्चिमी भाग थिक चम्पारण। त्रेता युगमे मिथिलाक महाराज जनक स्वयं हर जोति कऽ विपद्ग्रस्त कृषक समुदायकेँ मुक्ति-मार्ग देखौने छलाह। ओहि अवसरपर मिथिलाक कन्याक रूपमे सीता सदृश महानारीक प्राकट्य भेल छल।

गान्धीजीकेँ चम्पारणक धरतीपर प्रथम बेर पैर रखबाकाल त्रेता युगक महाराज जनकक स्मरण भेल छलनि से एही बातसँ स्वयंसिद्ध अछि, जे ओ अपन आत्मकथामे चम्पारण-प्रकरणक आरम्भे एहि वाक्यसँ करैत छथि जे-'चम्पारण महाराज जनकक भूमि थिकनि'।

उनैसम शताब्दीमे मिथिला क्षेत्रमे नीलक खेती प्रचुरतासँ कयल जाइत छल। एहि ठामक नील विदेशमे खूब महग बिकाइत छल। नीलक एहि व्यवसायपर अंगरेज निलहा साहेबक एकाधिकार छलैक। अंगरेज सब अपन शासन तन्त्रक बलपर मिथिलाक किसान सबसँ जबर्दस्ती नीलक खेती करबबैत छल आ ओकर व्यापार कऽ कऽ खूब धन कमाइत छल। मिथिला क्षेत्रमे बहुतो ठाम ओकर कोठी सब छलैक। अंगरेज निलहा साहेब सभक निरंकुश अत्याचारसँ मिथिलाक किसान त्राहि-त्राहि कऽ रहल छल। ओहि सबमे चम्पारण जिलामे निलहा साहेबक अत्याचार चरमावस्थामे छल।

बीसम शताब्दीक दोसर दशकक पूर्वार्द्धमे भारतीय राजनीतिमे मोहनदास करमचन्द गान्धीक प्रवेश भेल छलनि। ओहि समयमे निलहा साहेब द्वारा तिरहुतक कृषक सबपर जे भयंकर अत्याचार कयल जाइत छलैक, तकर प्रतिकार हेतु गान्धीजी जे सविनय अवज्ञा ओ सत्याग्रह आरम्भ कयलनि से न केवल भारतेक, अपितु समस्त विश्वक परतन्त्रताक बेड़ीमे जकड़ल देश

सभक मानव समुदायक मुक्ति-मार्ग बनि गेल । मोहनदास करमचन्द गान्धीकेँ ओ सत्याग्रह मानव-समाजक मुक्तिदाता महात्मा ओ युगपुरुष बना देलकनि ।

परन्तु गान्धीजीक जीवनी ओ स्वतन्त्रता-आन्दोलनक इतिहासमे ई तथ्य उजागर नहि भऽ सकल अछि जे गान्धीजीकेँ 'महात्मा' ओ 'कर्मवीर' पदसँ सर्वप्रथम विभूषित करबाक ऐतिहासिक श्रेय मिथिलाकेँ छैक ।

महात्मा गान्धीक चम्पारण-सत्याग्रहक समयमे मिथिलाक केन्द्र दरभंगासँ महाराज रमेश्वरसिंहक संरक्षकत्वमे मैथिली-हिन्दीमे **मिथिला-मिहिर** नामक साप्ताहिक पत्र सात-आठ वर्ष पूर्वहि (14 जनवरी 1909)सँ प्रकाशित होइत आबि रहल छल । पत्रकारिताक क्षेत्रमे ओकर अपन प्रतिष्ठा छलैक। चम्पारण जिलामे ओहि कालमे गरीब किसानपर अंगरेजी शासनक छत्रच्छायामे कोठीवाल, निलहा साहेब सभक द्वारा कयल जाइत भाँति-भाँतिक क्रूर अत्याचारक विरुद्ध दूर गुजरात प्रान्तक निवासी, किछुए वर्ष पूर्व अफ्रिकाप्रवाससँ प्रत्यावर्तित भेल मोहनदास करमचन्द गान्धी चम्पारण आबि अभिनव रीतिक अहिंसात्मक आन्दोलन करऽ लगलाह तँ ओकर आरम्भेसँ मिथिला-मिहिर गान्धीक आन्दोलनक समर्थनमे विस्तार-पूर्वक समाचार, अग्रलेख ओ गान्धीक विचार-प्रतिपादक निबन्ध सब प्रकाशित करऽ लागल आ बराबरि करैत रहल। 14 अप्रैल 1917केँ गान्धीजी चम्पारण पहुँचल छलाह आ ओहि दिन मिथिला-मिहिरक अंक प्रकाशित भऽ चुकल छल, परन्तु तुरन्त 21 अप्रैल 1917क अग्रिम अंकमे गान्धीजीपर भेल मोकदमाक विस्तृत विवरणयुक्त समाचार प्रकाशित भेल । ई क्रम आगाँ सेहो चलैत रहल जाहिमे चम्पारणक किसानक मध्य गान्धीजीक द्वारा कयल जायवला काजक विवरण गम्भीरतापूर्वक देल जाइत छल ।

मिथिला मिहिरमे प्रकाशित चम्पारणमे गान्धी-विषयक सामग्रीक दीर्घ शृंखला रहल जकर तिथि सहित शीर्षक देखल जा सकैछ, यथा-

21 अप्रैल, 1917 - महात्मा गान्धीक ऊपरमे मुकद्दमा
5 मइ, 1917 - बेतियामे कर्मवीर गान्धी
12 मइ, 1917 - चम्पारणमे महात्मा गान्धी, महात्मा गान्धीक चरित
19 मइ, 1917 - महात्मा गान्धी और निलहे साहब

26 मई, 1917 - मातृभाषा हिन्दीक प्रचार
16 जून, 1917 - महात्मा कर्मवीर गान्धीकेँ बैलयबा लेल निलहा साहेबक षड्यन्त्र
23 जून, 1917 - महात्मा गान्धीक आदर्श चरित्र
24 नवम्बर, 1917 - महात्मा गान्धीक दृढ़ता

अहिंसात्मक रूपमे विनम्रतापूर्वक विरोधक जाहि पद्धतिक सर्वप्रथम प्रयोग गान्धीजी चम्पारण-आन्दोलनमे कयने छलाह तकरा मिथिला मिहिर **'अप्रत्यक्ष प्रतीकार'** (Passive Resistance) नाम देलक जकरा भविष्यमे **'सविनय अवज्ञा'** ओ **'सत्याग्रह'** नामसँ प्रसिद्धि भेटलैक ।

ऊपर जे शीर्षक सब उद्धृत कयल गेल अछि ताहिमे प्रथमे शीर्षकमे तथा समाचार-विवरणमे मोहनदास करमचन्द गान्धीकेँ हुनक नामसँ अथवा सोझे गान्धीजी नहि कहि सतत 'महात्मा गान्धी', 'महात्मा कर्मवीर गान्धी' ओ क्वचित् 'कर्मवीर गान्धी' कहल जाइत रहलनि । आइ धरि एहन कोनो प्रमाण नहि भेटल अछि जाहिमे 21 अप्रैल 1917सँ पूर्व गान्धीकेँ 'महात्मा गान्धी' कहल गेल होइनि । अतः महात्मा गान्धीक नामक अभिन्न-अविछिन्न अंश बनि गेल 'महात्मा' अभिधान अर्पित करबाक ऐतिहासिक गौरव मिथिला मिहिर, मैथिली भाषा ओ मिथिलाभूमिकेँ छैक ।

युगपुरुष महात्मा गान्धी सन व्यक्ति कतोक युगमे गोटेक बेर उत्पन्न होइत छथि ।'धन्य छथि ओ लोकनि जे महात्मा गान्धीक सन्निधि-सम्पर्कमे रहि देशोद्धारमे लागल रहलाह । धन्य छथि ओ लोकनि जे महात्मा गान्धीकेँ प्रत्यक्ष रूपमे देखबाक, हुनक वचन श्रवण करबाक पुण्य अवसर प्राप्त कयलनि । धन्य छथि लाखक-लाख ओ भारतवासी जे महात्माजीक आह्वान पर स्वतन्त्रता संग्राममे अपनाकेँ झोंकि देलनि । धन्य तँ ओहो लोकनि छथि जे हुनक जीवन कालमे जन्म लेलनि, किन्तु हुनक दर्शन नहि कऽ सकलाह, अपना कानसँ हुनक अमृतवाणीक श्रवण नहि कऽ सकलाह। केवल समाचार, संचार, सार्वजनिक सामाजिक चर्चाक माध्यमसँ गान्धीजीकेँ अपना निकट होयबाक अनुभव करैत रहलाह । समकालीन होयबाक सौभाग्यक भागी बनलाह ।

30 जनवरी 1948केँ हुनक महाप्रस्थानक पश्चात् हुनक जीवन-दर्शन, व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, विश्व समुदाय ओ समग्र मानव जातिक सम्बन्धमे

हुनक चिन्ता-धारा एवं ओकरा व्यावहारिक जीवनमे उतारबाक प्रयोगक सम्बन्धमे जनबाक लेल, आत्मसात करबाक लेल सबसँ बड़का आधार रहि गेल अछि हुनका द्वारा सृष्ट विशाल वाङ्मय ।

जे मिथिला गान्धीमे 'महात्मा'क स्वरूपक दर्शन सर्वप्रथम कयलक, गान्धीजीक खाधी-आन्दोलन, स्वदेशी आन्दोलन, स्वतन्त्रता आन्दोलनकेँ अंगीकार कऽ अपन महत्त्वपूर्ण योगदान कयलक, जकर मातृभाषा मैथिलीमे गान्धी गीत-प्रशस्तिक सर्जन होइत रहल, ओहि मैथिलीमे गान्धी-वाङ्मयक सेहो अवतरण होयब अतीव आवश्यक । एहि दिशामे अवश्ये मैथिली पछुआयल जकाँ रहल अछि । गान्धीजीक स्फुट विचार, कोनो लेख एवं हुनक आत्मकथा मात्रक अनुवाद मैथिलीमे भऽ सकल अछि ।

एहि दिशामे डा. योगानन्दझा अग्रसर भऽ उत्साह देखौलनि अछि। योगानन्दझा मनस्वी अनुसन्धाता-आलोचक ओ सिद्धहस्त अनुवादक छथि । मैथिलीमे अनेक विशिष्ट कृतिक अनुवाद कयने छथि तथा साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित छथि । ई गान्धीजीक एकटा लघु, परन्तु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पुस्तक **'मंगल-प्रभात'**क मैथिली अनुवाद प्रस्तुत कयलनि अछि। एहि पुस्तकमे साबरमती आश्रममे आचरणीय व्रत-नियमक संक्षिप्त, किन्तु सरलतम व्याख्या कयल गेल अछि । एहिमे गान्धीजी द्वारा यरवदा जेलसँ प्रत्येक मंगलकेँ प्रार्थनाक बाद लिखल पत्रक संचय कयल गेल अछि। ओ पत्र आश्रमवासी लोकनिकेँ सुनाओल जाइत छलनि । जँ पत्र मंगल दिनक प्रभात बेलामे लिखल जाइत छल, तँ ओहि पत्र सभक संकलनकेँ **'मंगल प्रभात'** नाम देल गेल अछि । डा. योगानन्दझा मूल कृतिक भावकेँ अक्षुण्ण रखैत सरल मैथिली भाषामे एकरा प्रस्तुत कयलनि अछि । गान्धी-वाङ्मयक मैथिलीमे अवतारणाक ई प्रयत्न अवश्ये प्रशंसनीय अछि । आशा अछि महात्मा गान्धीक द्वारा अंगीकृत आदर्श जीवनक मूल सिद्धान्तक प्रतिपादक एहि कृतिक अवश्ये स्वागत होयत । कृति लघु अछि तँ की, **अल्पारम्भः क्षेमकरः।**

दिनांक : 21 अप्रैल 2012
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001

अनुवादक दिससँ

वर्ष 1999 इसवीक उत्तरार्द्धमे ज्येष्ठ भातिज (ई. श्रीपङ्कज)क सेवा पद्धतिक निरीक्षणार्थ हुनक कर्मक्षेत्र ओ अध्ययनोपरान्त प्रथम प्रवास नई दिल्ली पहिल बेर जयबाक सुअवसर भेटल । सुकठीक एहि बनिजक संग पशुपतिक दर्शनक ई लोभ छल जे ओही साल श्रद्धेय गुरुवर पंडित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जीकेँ साहित्य अकादेमी द्वारा हुनक **'परशुरामक बीछल-बेरायल कथा'** पर अनुवाद पुरस्कारक घोषणा भेल छलनि आ ओ पुरस्कारक प्रशस्ति एवं राशि प्राप्त करबाक हेतु नई दिल्ली जा रहल छलाह। स्वभावतः संग यात्रा कयने साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कारक समारोह देखबाक सुयोग भेटब सुनिश्चित छल ।

नई दिल्लीक एही यात्रा क्रममे चि० पङ्कज ओहि महानगरक दिग्दर्शन करौने छलाह आ कतोक प्रमुख स्थल सभ यथा रेल म्यूजियम, लालकिला, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, इंडिया गेट, कुतुबमीनार, शक्तिस्थल, वीर भूमि आदिक दरस-परस करैत राजघाट जयबाक अवसर भेटल छल जतऽ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीक अखण्ड ज्योति निरन्तर प्रज्वलित रहैछ ।

समाधिक दर्शनसँ सम्बद्ध बुक-स्टॉल पर गेलाक बाद **मंगल-प्रभात** पोथी कीनल जकरा पढ़लाक बाद मोनमे ई भावना आयल जे अपनो मातृभाषामे विश्वप्रसिद्ध गाँधी-दर्शनक तँ अभावे अछि, किएक ने एहि पोथीक मैथिली रूपान्तर कऽ ओकरा प्रकाशित कराय मैथिली-जगतकेँ गाँधीजीक मौलिक विचारसँ अवगत कराओल जाय । मुदा अनुवाद कार्य एक तँ कठिन, दोसर कॉपीराइटवलाक अनुमतिक झंझटि । तथापि साहस कऽ नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबादसँ पत्राचार कयल । ट्रस्टक ताहि दिनुक प्रबन्ध ट्रस्टी मान्यवर **श्री जीतेन्द्र देसाइ** सहर्ष अपन 01.01.1999क पत्र द्वारा किछु शर्त्तक संग गाँधी-दर्शनक ओहि पोथीक मैथिली अनुवादक स्वीकृति प्रदान कयलनि जाहिमे प्रमुख शर्त्त छल ट्रस्ट कें रॉयल्टीक रूपमे 125.00 (एक सए पचीस टाका मात्र) प्रदान करब जे हुनकालोकनिक रसीद संख्या 3271 दिनांक 16.11.1999 द्वारा भुगतान कऽ देल गेल । मुदा कखनो पलखति ओ बादमे संसाधनक अभावमे मंगल-प्रभातक मैथिली संस्करण प्रकाशित नहि कयल जा सकल । ट्रस्टक एकटा शर्त्त इहो छल जे ने तँ तीन सय प्रतिसँ बेसी छापल जाय आ ने दस टाकासँ बेसी दामे राखल जाय । विगत दस वर्षमे प्रकाशन व्यय अग्गहसँ बिग्गह होइत चल गेल । तँ ट्रस्टकेँ मैथिली संस्करणक मूल्य पर पुनः विचार करबाक आग्रह कयल । ततःपर

ट्रस्ट अपन प्रबन्ध ट्रस्टी मान्यवर **श्री कपिल रावलक** 12.05.2010 दिनांकित पत्र द्वारा एकर उचित मूल्य रखबाक अनुमति देलनि आ मंगल-प्रभात पुस्तकाकार अपनेक हाथमे आबि सकल अछि। ट्रस्टकेँ कृपापूर्ण अनुमतिक हेतु हम आभार व्यक्त करैत छियनि ।

विश्वविश्रुत महात्मा गाँधीक, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीक, भारत माताक पराधीनताक हथकड़ी आ बेड़ीकेँ सत्य आ अहिंसाक मंत्रसँ फोलि अपन दर्शनसँ विश्व मानवकेँ मुक्ति मंत्र पढ़ौनिहार गाँधीक दर्शनसँ सम्बद्ध ई पोथी जँ मैथिल समुदायकेँ हुनक आदर्श दिस कनेको इंगित करा सकल, तँ हम अपन श्रम-शक्तिकेँ सार्थक बूझब । एतऽ ई मोन पाड़ब अनपेक्षित नहि जे एही गाँधीजीक आह्‌वान पर 1942क आन्दोलनमे मिथिला अपन शान्त प्रकृतिक अवहेलना करैत भारतीय स्वतंत्रताक हेतु आन कोनो प्रदेशसँ पाछू नहि रहल छल आ स्वतंत्रता प्राप्तिक लगले बाद एहि महात्माक हत्यासँ दलमलित भऽ गेल छल जकर भावुक साहित्यिक अभिव्यक्ति मिथिलाक बोलमे मैथिल दधीचि **पं. सुरेन्द्रझा 'सुमन'**क लेखनीसँ द्रवित भऽ स्वदेशक माध्यमे प्रसारित भेल छल । एकर अनुलेखन पोथीक कॉभर पृष्ठ दू आ तीन पर कऽ देल गेल अछि ।

पं. श्रीचन्द्रनाथमिश्र' अमर'जीक आशीर्वचन हमर संबल बनल अछि। पोथीक भूमिका लिखि सव्यसाची विद्वानक अभिधानसँ विश्रुत **डा. रामदेवझा** एकर गरिमा ओ हमर प्रयासक सार्थकताक प्रति आश्वस्ति व्यक्त कयलनि अछि, से स्नेहवशात्, जाहिसँ अभिभूत हम हुनक अकिञ्चनक प्रति अमल भावराशि जन्य औपचारिक आभार व्यक्त कऽ मुक्ति नहि चाहब। साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे मैथिली परामर्शदातृ समितिक संयोजक डा.विद्यानाथझा 'विदित'क प्रेरणा-प्रोत्साहनक हेतु आभारी छियनि । पत्रकार ओ इतिहासज्ञ चि. डा. शंकरदेवझाजी अनुवादक कतोक शब्दावलीकेँ कसौटी पर कसैत रहलाह अछि, तेँ हुनक सारस्वत सम्मान करैत छियनि । कतोक उर्दू शब्दक मैथिलीकरणमे बन्धुवर डा. मंजर सुलेमान सहायक भेलाह। हुनक आभारी छियनि । पोथीक प्रणयनसँ प्रकाशन धरिक हेतु प्रेरक-उत्प्रेरक **विद्यापति टाइम्स** मैथिली पाक्षिक, दरभंगाक अधिष्ठाता श्रीविनोदकुमारजीक प्रति सेहो प्रणत छी । मिथिलाक्षर संयोजन हेतु श्रीअमलेन्दु शेखर पाठकजीकेँ धन्यवाद ज्ञापन करैत छियनि ।

डा. योगानन्दझा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मो.-09334493330

गाँधी जयन्ती
02.10.2012

निवेदन

गाँधीजीक विचार हल्लुक हिन्दुस्तानीमे जनताक समक्ष राखब 'गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, दिल्ली'क अनेक काज सभमे सँ एक गोट विशिष्ट काज थिक । गाँधीजी बेसीकाल प्रसादगुणसम्पन्न भाषहिमे लिखैत छलाह । ओ गुजराती मे जे किछु लिखने छथि, से अत्यन्त सरल अछि । तथापि सम्भव छैक जे गुजराती, हिन्दी आ आन-आन भाषा सभमे जे शब्दावली सहजहिँ ग्राह्य रहल अछि, से सभ केवल उर्दू जननिहारलोकनिक हेतु नव हो । तेँ अनुवादमे एहन शब्दावलीक संगहि सरल उर्दू शब्द सेहो दऽ देब नीक मानल गेल अछि । आशा कयल जाइत अछि जे एहि सँ उर्दू भाषा हिन्दीक आर निकटतर आओत आ उर्दूभाषी जनता हिन्दुस्तानक अन्य भाषा-भाषीक साहित्यहुकेँ सहजतापूर्वक बूझि सकताह ।

06.06.1958 इसवी
मुम्बई

काका कालेलकर

अनुक्रमणिका

'मंगल-प्रभात'

गाँधीजी यरवदा जेलक नाम 'यरवदा मंदिर' रखने छलाह । ओहिठाम हुनका बाहरसँ किछु अखबार पढ़बाक हेतु भेटैत छलनि आ आश्रमसँ सेहो नीक संख्यामे पत्रादि अबैत रहैत छलनि, तथापि ई कहल जा सकैछ जे अवकाशक क्षण ओ सूत यज्ञ, चरखा-भक्ति आ गीतेक चिन्तनमे गमौलनि । ओहि कालावधि मे साबरमती आश्रमक जीवनमे बेस जीवन्तताक आवश्यकता छैक, से मांग दु-चारि गोट स्वयंसेवी बन्धुलोकनिक दिससँ अयला पर ओ आश्रमवासीलोकनिक हेतु साप्ताहिक पत्राचार आरम्भ कयलनि । कोनो काज शुरूह होमय, तँ तकर निरन्तरता बनल रहबाक चाही, गाँधीजीक ई आग्रह भेला पर ओ मंगल दिन प्रातःकालक प्रार्थनाक बाद एकटा कऽ प्रवचन पठयबाक संकल्प लेलनि । ओहि संकल्पक प्रथम परिणाम थिक आश्रमक व्रत पर हुनक ई व्याख्या । पहिने ई 'व्रत-विचार' नामसँ प्रकाशित भेल छल ।

आदर्श बन्दीक नमूनाक हैसियतसँ सरकारकँ सभ तरहँ अभय-दान प्रदान कयनिहार गाँधीजी जहलसँ स्वदेशीक सम्बन्धमे किछुओ नहि लिखबाक निर्णय लेने छलाह । तँ 'व्रत-विचार' मे स्वदेशीक विषय समाहित नहि छल । बाहर अयला पर ओ 'स्वदेशी-व्रत' पर एकटा

निबन्ध लिखलनि जे 'नवजीवन' मे प्रकाशित अछि । एहि बेर ओ निबन्ध एहि पोथीमे अनुगुम्फित कऽ आश्रम-व्रतक व्याख्या पूर्ण कयल गेल अछि।

जेना कि ऊपर कहल गेल अछि, ई प्रवचन सभ मंगल दिनुक प्रभात बेलामे लिखल जाइत छल, तेँ एहि प्रवचन-संग्रहक नाम **'मंगल-प्रभात'** सैह राखल गेल अछि । जखन हमरालोकनिक जातीय जीवनमे निराशाक घोर साम्राज्य पसरल छल, तखन जे व्रत सभ राष्ट्रीय जीवनमे आशा, अपना पर आत्मविश्वास, फुर्ती ओ धार्मिकताक वातावरण तैयार कयलक ओएह व्रत-सभ एकटा नव संस्कृति, नव सांस्कृतिक धरोहरक **'मंगल-प्रभात'** आरम्भ कयने छल । जँ हम सभ से मानि ली तँ कोनो अतिशयता नहि होयत ।

दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

सत्य

ता. 22.07.30
प्रातःकालीन प्रार्थनाक बाद

हमरालोकनिक संस्थाक आधारे सत्यक आग्रहपर, प्रार्थनाक वाद सच्चाइपर अडिग होयबापर रहल अछि । तेँ पहिने सत्ये पर विचार करैत छी।

'सत्य' शब्द सत्सँ व्युत्पन्न अछि । सत् माने स्थिति । सत्य माने विद्यमानता । सत्यक अतिरिक्त आन कोनो वस्तुक अस्तित्व छैके नहि। परमेश्वरक वास्तविक नामे 'सत्' अर्थात् 'सत्य' छनि। तेँ परमेश्वर 'सत्य' छथि से कहबाक बदला 'सत्ये' परमेश्वर थिक से कहब बेसी समीचीन । राजकर्त्ता अथवा सरदारक बिना हमरालोकनिक काज नहि चलि सकैत अछि। तेँ परमेश्वर नाम बेसी प्रचलित भऽ गेल अछि आ रहत । मुदा विचार कयला उत्तर तँ लागत जे 'सत्' अथवा 'सत्ये' नाम ठीक अछि आ वैह पूर्ण अर्थ प्रदान करऽवला अछि ।

आ जतऽ सत्य अछि ततऽ ज्ञान-शुद्ध ज्ञान-अछिये । जतऽ सत्य नहि ततऽ शुद्ध ज्ञान कथमपि नहि भऽ सकैत छैक । तेँ ईश्वरक नामक संगे 'चित्' अर्थात् ज्ञान शब्दकेँ जोड़ल गेल अछि । आ जतऽ वास्तविक ज्ञान अछि ओतऽ आनन्दे रहैत छैक, शोक भइये नहि सकैत छैक । आ सत्य शाश्वत अछि, तेँ आनन्दो शाश्वत अछि । तेँ ईश्वरकेँ हमरालोकनि सच्चिदानन्द (सत्-चित्-आनन्द) नामहुसँ जनैत छियनि।

एहि सत्यक भक्तिक हेतुए हमरालोकनिक अस्तित्व रहय । ओकरे लेल प्रत्येक श्वासोच्छ्वास ली। हमरालोकनि जँ एना करब सीखि ली तँ आन समस्त नियमो धरि सहजतासँ जूमि जा सकैत छी आ ओकरा सभक पालनो सरल भऽ जायत। सत्यक बिना कोनो नियमक शुद्धतापूर्वक पालन असम्भव अछि। साधारणतः हमरालोकनि सत्य अर्थात् सच बाजब-एतबेटा बुझैत छी । मुदा हम तँ सत्य शब्दक व्यवहार व्यापक अर्थमे कयलहुँ अछि। विचारमे, वाणीमे आ व्यवहारमे सच्चाइये सत्य थिक । एहि सत्यकेँ सम्पूर्णतया

बुझनिहारक लेल जगतमे आर किछु ज्ञातव्य नहि रहि जाइत छनि, किएक तँ समस्त ज्ञान ओहिमे समाहित अछि, से हमरालोकनि ऊपर विचारि चुकल छी। जे ओहिमे अँटि नहि सकय से सत्य नहि थिक, ज्ञान नहि थिक, तखन ओहिमे भला वास्तविक आनन्द भइये कोना सकैत छैक ?

जँ एहि कसौटीक उपयोग करब सीखि जाइ तँ हमरालोकनिकेँ लगले ज्ञात भऽ जायत जे केहन काज करबाक योग्य अछि आ केहन बारबाक योग्य, की देखबाक योग्य अछि आ की नहि, की पाठ्य अछि आ की नहि ।

मुदा पारसमणि सदृश, कामधेनुक सदृश, सत्यकेँ कोना पाओल जाय? भगवान एकर उत्तर देने छथि: अभ्यास सँ आ वैराग्य सँ। सत्येक तृष्णा अभ्यास थिक; ओकरा छोड़ि आन समस्त वस्तु मात्रक सम्बन्धमे आत्यन्तिक उदासीनता-निःस्पृहता वैराग्य थिक । तथापि हमरालोकनि पायब जे जे एक गोटाक हेतु सत्य अछि सैह दोसराक लेल असत्य । एहिमे घबड़यबाक कोनो कारण नहि। जतऽ शुद्ध प्रयत्न छैक ओहिठाम भिन्न- भिन्न बुझल जाइवला सभटा सत्य एके गोट गाछक भिन्न-भिन्न देखाइवला असंख्य पातक समान अछि । की परमेश्वर प्रत्येककेँ भिन्न-भिन्न नहि बुझना जाइत छथिन ? तैयो हम सभ ई जनैत छी जे ओ एकेटा छथि। मुदा सत्य नाम थिक परमेश्वरक । तेँ जकरा जे सत्य बुझि पड़ैक तदनुरूप व्यवहार करय, ताहिमे दोष नहि। ततबे नहि, ओएह ओकर कर्त्तव्य थिकैक । पुनश्च से करबामे जँ कोनो गलतीयो भऽ जयतैक तँ से अवश्ये सुधरि जयतैक; किएक तँ सत्यक अन्वेषणक पाछाँ तपस्या होयबाक कारणेँ स्वयं कष्ट सहन करऽ पड़ैत छैक, ओकरा लेल बलिदान देबऽ पड़ैत छैक। तेँ ओहिमे स्वार्थक तँ गंधोटा नहि रहैछ। एहन निःस्वार्थ अन्वेषण करैत आइ धरि केओ गलत मार्गसँ अन्तपर्यन्त नहि जा सकल । गलत मार्ग पर जाइते मातर ओकरा ठेस लगिते छैक आ फेरसँ ओ सोझ मार्ग पर चलि अबैत अछि । तेँ आवश्यक छैक सत्यक आराधनाक

अर्थात् भक्तिक। आ ई भक्ति तँ माथकेँ हाथपर लऽ कऽ चलबाक अनुबन्ध थिक अथवा ओ 'हरिक मार्ग' थिक; ओहिमे कायर आ डरपोकक लेल स्थान नहि छैक, ओहिमे पराजय सन कोनो वस्तुए नहि छैक । ओ तँ मुइलाक उपरान्त जीबाक मन्त्र थिक ।

मुदा आब हमरालोकनि लगभग अहिंसाक कछेर धरि आबि चुकल छी । ताहि पर हम अगिला हफ्ता विचार करब।

एहि प्रसंगक अवसर पर हमरालोकनिकेँ हरिश्चन्द्र, प्रह्लाद, रामचन्द्र, इमाम हसन-हुसेन, इसाइ संतलोकनि आदिक उदाहरणक चिन्तन करबाक चाही। अगिला हफ्ता धरि बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सब केओ चलैत-फिरैत, बैसैत-उठैत, खाइत-पीबैत, खेलाइत-धुपाइत, सभ किछु करैत ई विचार-चिन्तन करैत रहथि आ से करैत-करैत निर्दोष निद्रा प्राप्त करथि, तँ केहन बढ़ियाँ हो। ओ सत्यस्वरूप परमेश्वर हमरालेल रत्न चिन्तामणि (अभीष्ट फलदायी रत्न) सावित भेलाह अछि; हमरालोकनि सभ गोटेक हेतु सैह सावित होथु ।

●

अहिंसा

ता. 29.07.30
मंगल-प्रभात

सत्यक, अहिंसाक मार्ग जतबे सोझ अछि ततबे संकीर्ण सेहो; तरुआरिक धार पर चलबाक समान अछि । नटबा सभ जाहि डोरी पर एकटक ध्यान राखि चलि सकैत अछि, सत्य-अहिंसाक डोरी ताहूसँ बेसी पातर अछि । कनेको चूक भेल कि धड़ामसँ खसले बूझू। प्रतिपलक तपश्चर्येसँ ओकर दर्शन भऽ सकैत छैक।

मुदा सत्यक सम्पूर्णतामे दर्शन तँ एहि देहसँ असम्भव अछि। ओकर तँ केवल कल्पनाटा कयल जा सकैत अछि । क्षणभंगुर देहसँ शाश्वत धर्मक साक्षात्कार-दर्शन संभव नहि छैक । तँ अन्ततः श्रद्धाक उपयोग तँ करहि पड़ैत छैक ।

तँ अहिंसाकेँ जिज्ञासुलोकनि ग्रहण कयलनि । हमर मार्गमे जे संकट आबय तकरा सहन करी अथवा ताहि लेल जकर नाश करऽ पड़य से करैत चली आ अपन मार्ग तय करी ? एहन सवाल जिज्ञासुक समक्ष अयलनि । ओ देखलनि जे ओ नाश करैत चलैत छथि तँ मार्ग तय नहि कऽ पबैत छथि आ जतऽसँ चलल छलाह ततहि रहि जांइत छथि । जँ ओ विपत्ति सहन करैत छथि तँ आगू बढ़ैत छथि । पहिनहि नाशक समय ओ देखलनि जे जाहि सत्यकेँ ओ ताकि रहल छथि से बाहर नहि अपितु हुनका अपने भीतर छनि। तँ ओ जेना-जेना नाश करैत चलैत छथि तेना-तेना पिछड़ल जाइत छथि, सत्यसँ दूर भागल जाइत छथि ।

चोर हमरालोकनिकेँ सतबैत अछि । तखन ओकरासँ बचबाक हेतु हमरालोकनि ओकरा सजाय दैत छियैक। ओहि क्षण ओ जरूर पड़ा जाइत अछि मुदा दोसर ठाम डाका दैत अछि। मुदा ओ दोसरो ठाम अपने अछि, तँ हम तँ अन्हारे गलीमे ने ठोकर खयलहुँ। चोरक उपद्रव बढ़ले जाइत अछि किएक तँ ओ चोरीकेँ अपन पेशा मानि लेने अछि। हमरालोकनि पबैत छी जे एहिसँ बेसी नीक तँ ई अछि जे चोरक उपद्रवकेँ सहन कयल जाय। से कयने चोरोकेँ बुद्धि अओतैक। एतेक सहन कयला उत्तर हमरालोकनि पबैत

छी जे चोर कोनो हमरालोकनिसँ अलग नहि अछि । हमरालोकनिक लेल तँ सभ केओ सर-संबंधी छथि, मित्र-सखा छथि । हिनका सजा नहि देल जा सकैत छनि। मुदा उपद्रव सहैत जायबेटा पर्याप्त नहि अछि । ओहिसँ तँ कायरता उत्पन्न होइत छैक। तँ हमरालोकनि एकटा आर विशिष्ट धर्मक अनुभव करैत छी । जँ चोर हमर भाइ-बन्धु होथि तँ से भावना हुनकालोकनिमे उत्पन्न करबाक चाही । तँ हुनकालोकनिकेँ मिलयबाक पद्धति तकबाक आवश्यक कष्ट हमरो सभकेँ उठयबाक चाही। ई थिक अहिंसाक मार्ग । एहिमे अधिकाधिक दुःखेकेँ अङेजबाक बात अबैत छैक, अक्षय धैर्य सिखबाक बात अबैत छैक । आ जँ ओ धैर्य हमरामे आबि जाइत अछि तँ अन्ततः चोर साहुजी बनि जाइत अछि, हमरालोकनिकेँ सत्यक अधिक स्पष्ट दर्शन होइत अछि । एहि तरहेँ हमरालोकनि जगतकेँ संगी बनायब सीखैत छी, हमरालोकनि ईश्वरक, सत्यक महिमाकेँ बेसी अनुभव करऽ लगैत छी; संकटमे रहलोपर हमरालोकनिक शान्ति, हमरालोकनिक सुख बढ़ैत अछि, हमरालोकनिमे साहस, उदारता आ हिम्मत बढ़ैत अछि, हमरालोकनि चिरन्तन ओ नश्वरक भेद बेसी बूझऽ लगैत छी, कर्त्तव्याकर्त्तव्यक विवेक भऽ जाइत अछि। हमरालोकनिक गर्व गलित भऽ जाइत अछि आ विनम्रता बढ़ैत अछि; हमरालोकनिक परिग्रह स्वयमेव घटि जाइत अछि आ शरीरमे भरल मैली सदिखन घटैत जाइत अछि ।

ई अहिंसा आइकाल्हि हमरालोकनि जकरा स्थूल बुझैत छी सैहटा नहि थिक। ककरो नहि मारब, ई तँ अहिंसा थिके। समस्त अधलाह विचारो हिंसे थिक । हड़बड़ी हिंसा थिक । झूठ बाजब हिंसा थिक । इर्ष्या-द्वेष-शत्रुता हिंसा थिक । ककरो अधलाह चाहब हिंसा थिक । जाहि वस्तुक आवश्यकता संसार भरिकेँ छैक, तकरा दफानि लेब सेहो हिंसे थिक। मुदा हमरालोकनि जे किछु खाइत छी से जगतक हेतु जरूरी छैक । हमरालोकनि जतऽ ठाढ़ छी ओतऽ सैयन सूक्ष्म जीव अवस्थित छथि आ दुखी होइत छथि; ई स्थान हुनके थिकनि तँ की हमरालोकनि आत्महत्या कऽ ली ? ताहूसँ निस्तार नहि अछि। जँ वैचारिक रूपेँ हमरालोकनि शरीरक प्रति समस्त ममत्वक त्याग कऽ दी

तँ अन्तमे शरीरे हमरालोकनिकेँ त्यागि देत । ई मोहरहित स्वरूपे सत्य नारायण थिकाह। ई दर्शन धरफड़यने नहि भेटैत छैक । शरीर हमरालोकनिक अपन नहि थिक, ई तँ (दोसराकेँ देबाक हेतु भेटल) दोसराक वस्तु थिक से बूझैत एकर जे उपयोग भऽ सकैत अछि, से कऽ हमरालोकनि अपन गन्तव्य तय करी।

हमरा तँ सरल भाषामे लिखबाक छल मुदा लिखा गेल जटिल ढंगसँ। तथापि जे केओ अहिंसाक सम्बन्धमे कनेको विचार कयने होयताह, तनिका ई बुझबामे कठिनता नहि होयबाक चाहियनि।

एतेक तँ सभ केओ बूझि लेथि। बिनु अहिंसाक सत्यक अन्वेषण असंभव अछि । अहिंसा आ सत्य तेना ओतप्रोत-तानी-भरनी जकाँ एक दोसरासँ सम्बद्ध अछि जेना सिक्काक दूनू तल अथवा चिक्कन चकतीक दूनू पहलू । ओहिमे उन्टा कोन अछि आ सुन्टा कोन ? तथापि अहिंसाकेँ हमरालोकनि साधन अर्थात कारक मानी आ सत्यकेँ साध्य अर्थात लक्ष्य । साधन हमरालोकनिक हाथक बात थिक, तेँ अहिंसा परम धर्म भेल आ सत्य परमेश्वर । जँ हमरालोकनि साधनक चिन्ता करैत रहब तँ साध्यक दर्शन कोनो ने कोनो दिन अवश्ये कऽ लेब । एतेक निश्चय कयल कि जग जीति लेल । हमरालोकनिक मार्गमे खाहे जे संकट आबय, बाह्य दृष्टिसँ देखला उत्तर हमरालोकनिक चाहे जतेक हार परिलक्षित हो, तथापि विश्वासक परित्याग बिनु कयने एके गोट मन्त्रक जाप करी-सत्य छैक। वैह छैक । वैहटा एकमेव परमेश्वर थिकाह । हुनक साक्षात्कार करबाक एकेटा मार्ग, एकमेव साधन अहिंसा अछि, तकरा हम कहियो ने छोड़ब । जाहि सत्यरूप परमेश्वरक नामसँ हम ई प्रतिज्ञा कयल अछि, ओ एकरा निमाहबाक बल प्रदान करथि।

●

ब्रह्मचर्य

ता. 05.08.30 य.मं.
मंगल-प्रभात

हमरालोकनिक व्रतमे तेसर व्रत ब्रह्मचर्यक अछि । वास्तवमे दोसर सभटा व्रत एके गोट सत्येक व्रत सँ बहार होइत अछि आ ओकरे लेल अछि। जे आदमी सत्येकेँ पसिन्न कयने अछि, जे ओकरे उपासना करैत अछि, ओ जँ ओकरा छोड़ि कोनो आन वस्तुक आराधना करैत अछि, तँ व्यभिचारी सिद्ध होइत अछि। तखन फेर विकारक आराधना भइये कोना सकैत अछि ? जकर समस्त वृत्ति, सभटा कर्म, सत्यक दर्शनक हेतु छैक, ओ सन्तान जनमयबाक हेतु अथवा घर-संसार, गोत्र-कुटुम्ब चलयबाक काजमे कोना लागि सकैत अछि ? भोग-विलाससँ केओ सत्यकेँ जनने हो, से आइधरि कोनो उदाहरण हमरा समक्ष नहि अछि ।

अथवा हमरालोकनि अहिंसाक पालनकेँ ली, तँ ओकर सम्पूर्णतामे पालन करब ब्रह्मचर्यक बिना असंभव अछि । अहिंसा, अर्थात् सभ ठाम पसरल, सर्वव्यापी प्रेम। जखने पुरुष कोनो एकटा स्त्रीकेँ किंवा स्त्री एक गोट पुरुषकेँ अपन प्रेम दऽ देलकैक, तखने ओकरा लग दोसराक लेल रहबे की कयलैक ? तकर माने यैह भेल जे 'हम दूनू गोटे पहिने, आन सभ बाद मे'। पतिव्रता स्त्री पतिक हेतु आ पत्नीव्रती पति पत्नीक हेतु सभ किछु गमयबाक हेतु तत्पर रहत, तेँ ई तँ स्पष्टे अछि जे ओकरासँ सर्वव्यापी प्रेमक पालन कथमपि नहि भऽ सकतैक । ओ सौंसे दुनिञाकेँ अपन कुटुम्ब नहिञे बना सकत, किएक तँ ओकर 'अपन' मान्य कुटुम्ब पूर्वहिसँ विद्यमान छैक अथवा बनि रहल छैक । ओ कुटुम्ब जतबे बढ़ैत छैक, ततबे सर्वव्यापी प्रेममे, विश्वप्रेममे बाधा अबैत छैक। सम्पूर्ण संसारमे हमरालोकनि एना होइत देखि रहल छी । तेँ अहिंसा व्रतक पालन करऽवला आदमी बिआह नहि कऽ सकैत अछि, तखन फेर बिआहक परिधिसँ बाहरक विकारक तँ जनतबे की?

तखन जे सभ बिआह कऽ चुकल छथि, हुनक की हो ? की ओ

लोकनि कहियो सत्यकेँ नहि पाबि सकताह ? की ओलोकनि कहियो सर्वार्पण-सभ किछु त्याग नहि कऽ सकताह ? हम ओकर पयरा बहार कयलहुँ अछि । विवाहित लोक सभ अविवाहित जकाँ बनि जाथि । एहि दिशामे एहिसँ बढ़ि कऽ आन किछु हमरा अनुभवमे नहि आयल अछि । एहि अवस्थाक रस जे लोकनि चिखने छथि, सैह लोकनि गबाही दऽ सकैत छथि। आब तँ एहि प्रयोगक सफलता सिद्धे भऽ चुकल अछि, से कहल जा सकैत अछि । विवाहित स्त्री-पुरुष एक-दोसराकेँ भाइ-बहिन बूझऽ लागथि, तँ सभटा जंजाल नष्ट भऽ जाइत अछि । संसारक सभटा स्त्री बहिन छथि, माता छथि, धी-बेटी छथि, ई चिन्तने आदमीकेँ एकदम ऊँच लऽ जायबला अछि, बन्धनसँ मुक्ति दिआबऽवला भऽ जाइत अछि। एहिमे पति-पत्नीकेँ किछु हेराइत नहि छनि, अपितु अपन पूजीकेँ बढ़ा लैत छथि, कुटुम्बक पसार बढ़ा लैत छथि आ विकार रूपी मैलीकेँ बहार कऽ कऽ प्रेमकेँ सेहो विस्तृत कऽ लैत छथि । विकार नहि रहलासँ एक दोसराक सेवा बेसी नीक जकाँ भऽ सकैत छैक, अपनामे झगड़ा-दनक अवसर घटैत छैक । जतऽ स्वार्थी, एकांगी प्रेम होइत छैक, ततऽ झगड़ा-दनक हेतु बेसी अवसर रहैत छैक ।

उपरका प्रमुख गप्प सोचि लेलाक बाद आ ओकरा सभकेँ हृदयमे बैसा लेलाक बाद ब्रह्मचर्यसँ होमयवला शरीरक लाभ, वीर्य लाभ आदि अत्यन्त गौण भऽ जाइत छैक । जानि-बूझि कऽ भोग-विलासक लेल वीर्यकेँ गमायब आ शरीरक दोहन कतेक पैघ मूर्खता थिक ? वीर्यक उपयोग दूनूक शरीर आ मनक शक्तिकेँ बढ़यबाक हेतु छैक । विषय-भोगमे ओकर उपयोग करब ओकर बहुत पैघ दुरुपयोग थिकैक आ तँ ओ अनेक बीमारीक मूल भऽ गेल करैत छैक ।

एहन ब्रह्मचर्य मन, वचन आ तनसँ पालन करबा योग्य होइत छैक। सभटा व्रतकेँ तहिना बुझबाक थिक । जे देहकेँ काबूमे रखैत अछि, मुदा मनमे विकारकेँ पोसने रहैत अछि से मूढ़ आ मिथ्याचारी थिक, से हमरालोकनि गीतामे पढ़ने छी; सभ केओ एकर अनुभव कयने छी । मनकेँ

विकारयुक्त रहऽ देब आ देहकेँ दबयबाक कोशिश, एहिमे नोकसाने छैक । जतऽ मन रहत, ततऽ देह बिनु आकर्षित कयने रहबे नहि करत । एहिठाम एकटा गोपनीय बात बूझि लेब आवश्यक। मनकेँ विकारवश होमऽ देब एकटा तथ्य थिक, मन स्वयं बिनु इच्छाक, बलजोरी विकारयुक्त भऽ जाय अथवा भऽ गेल करय, से दोसर तथ्य। ओहि विकारमे हम सहायक नहि बनी, तखन अन्तमे हमर विजय अछिए । ई हमरालोकनि प्रतिक्षण अनुभव करैत छी जे शरीर वशमे रहैत अछि मुदा मन नहि । तँ शरीरकेँ लगले वशमे कऽ कऽ हमरालोकनि मनकेँ वशमे करबाक निरन्तर प्रयास करैत रही, तखन हम अपन कर्त्तव्य पूरा कऽ लेलहुँ । मनक वशमे हम भेलहुँ कि देह आ मनक झगड़ा शुरू भेल, मिथ्याचार शुरू भऽ गेल । यावत् धरि हमरालोकनि मनक विकारकेँ दबबैत रहब, तावत् धरि दूनू संगे-संगे चलैत रहत, से कहल जा सकैत अछि ।

एहन ब्रह्मचर्यक पालन बेस मुश्किल, लगभग असम्भवे बुझल गेल अछि । तकर कारण तकला पर पता लगैत छैक जे ब्रह्मचर्यक संकीर्ण, संकुचित अर्थ कयल गेल छैक । जननेन्द्रियक (लिंग, योनि) विकार पर काबू राखबे ब्रह्मचर्यक पालन थिक, से मानल गेल अछि। हमरा बुझना जाइत अछि जे ई आधा-छीधा आ गलत व्याख्या थिक। समस्त विषय पर रोक, काबू सैह ब्रह्मचर्य थिक। जे आन-आन इन्द्रिय सभकेँ व्यसन सभकेँ जतऽ-ततऽ हुलकौने रहैत अछि आ एकेटा इन्द्रियकेँ रोकबाक चेष्टा करैत अछि, से अकार्यक प्रयास करैत अछि, एहिमे कोन शक ? कानसँ विकारक गप्प सुनैत रहय, आँखिसँ विकार उत्पन्न करऽवला वस्तु देखैत रहय, जीहसँ विकारकेँ तेज करऽवला वस्तु सुआदि-सुआदि कऽ खाय, हाथसँ विकारकेँ तेज करऽवला वस्तुकेँ छूबय आ तैओ जँ केओ जननेन्द्रियकेँ रोकबाक इच्छा राखय, तँ ओ आगिमे हाथ राखि नहि जरबाक प्रयास जकाँ होयत । तँ जे जननेन्द्रियकेँ रोकबाक संकल्प कऽ लिअय, ओकरा समस्त इन्द्रियकेँ विकारसँ रोकबाक संकल्प कइये लेबाक चाही । ब्रह्मचर्यक संकुचित

व्याख्यासँ नोकसान भेल अछि, से हमरा सदिखन लागल अछि । हमर तँ निश्चय मत अछि आ हमर अनुभवो अछि जे जँ हमरालोकनि एके संग सभटा इन्द्रियकेँ वशमे अनबाक आदति लगाबी, तँ जननेन्द्रियकेँ वशमे अनबाक प्रयास लगले सफल भऽ जायत । एहिमे मुख्य वस्तु अछि स्वादेन्द्रिय आ तँ ओकर संयमकेँ हम अलगे स्थान देल अछि । ओकर सम्बन्धमे हम एकर बाद चिन्तन करब ।

ब्रह्मचर्यक मूल अर्थकेँ सभ गोटे मोन पाड़ी । ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्मक-सत्यक अन्वेषणमे क्रियाशीलता अर्थात् ओकर सम्बन्धमे आचार-व्यवहार। एहि मूल अर्थमे सँ समस्त इन्द्रियक संयम, ई विशेष अर्थ बहराइत अछि। खाली जननेन्द्रियक संयम, एहन आधा-छीधा अर्थ तँ हमरालोकनि बिसरिये जाइ ।

अस्वाद

ता. 12.08.30
मंगल-प्रभात

ई व्रत ब्रह्मचर्य संग अत्यन्त निकटक संबंध राखऽबला अछि। हमर अनुभव अछि जे जँ मनुष्य एहि व्रतकेँ पार लगा लेथि, तँ ब्रह्मचर्य अर्थात् जननेन्द्रियक संयम बेस सहज भऽ जयतनि । मुदा सामान्यतः एकरा व्रतमे पृथक्सँ स्थाने ने देल जाइत छैक । स्वादकेँ पैघ-पैघ मुनियों नहि जीति सकलाह, तँ एहि व्रतकेँ पृथक् स्थान नहि भेटलैक । ई तऽ खाली हमर अनुमान थिक । से होइक वा नहि, हम एहि व्रतकेँ पृथक् स्थान देलहुँ अछि, तँ एहिपर पृथके विमर्श कऽ लेब श्रेयष्कर होयत ।

अस्वाद माने स्वाद नहि लेब। स्वाद माने रसक आनन्द । जेना औषधि खाइत काल ओ चहटगर अछि वा नहि, तकर विचार बिनु कयनहि, देहकेँ ओकर आवश्यकता छैक, से बूझि ओकरा खोराके भरि हमरालोकनि ग्रहण करैत छी, तहिना अन्नोकेँ बुझबाक चाही। अन्न माने खयबा योग्य सभ वस्तु । तँ एहिमे दूध आ फल सेहो आबि जाइत अछि। जेना औषधि कम मात्रा मे लेल जाय, तँ असरि नहि करैत छैक अथवा कम प्रभाव दैत छैक आ बेसी मात्रामे लेल जाय तँ नोकसान करैत छैक, तहिना अन्नोक संग छैक। तँ कोनो वस्तुकेँ केवल स्वादक लेल खायब व्रतकेँ भंग करब थिक । चहटगर वस्तु खायब तँ सहजहिँ व्रत-भंग करब थिक। ताहिपर सँ हमरालोकनिकेँ ई बुझबाक चाही जे कोनो वस्तुक स्वाद बढ़यबाक हेतु अथवा बदलबाक हेतु अथवा नीरसताकेँ समाप्त करबाक हेतु ओहिमे नोनो मिलायब पर्यन्त व्रत-भंग थिक । मुदा खोराकमे अमुक मात्रामे नोनक आवश्यकता छैक, से हमरालोकनि जनैत छी आ तँ ओहिमे नोन मिला दी तँ से करबामे व्रत-भंग नहि छैक । शरीरक पोषणक हेतु आवश्यकता छैके नहि, तथापि मोनकेँ ठकबाक हेतु 'आवश्यकता छैक' से कहि क़ऽ कोनो वस्तुकेँ ऊपरसँ मिला देब तँ मिथ्याचार-फूसि-फटकक व्यवहार थिक ।

एहि दृष्टिजे विचारला उत्तर हमरालोकनि पायब जे जाहि अनेक वस्तुकेँ हमरालोकनि खाइत छी, से सभ शरीरक पोषणक हेतु आवश्यक नहि होयबाक कारण त्याज्य होइत अछि । आ एहि तरहेँ असंख्य वस्तुक त्याग जनिका लेल प्राकृतिक भऽ जाइनि, हुनक समस्त विकार शान्त भऽ जाइत छनि । 'एकटा हाँड़ी तेरहटा वस्तु मँगैत अछि' (एक तोलडी तेर वानां मागे छे), पेट बेगार करबैत छैक (पेट करावे वेठ); पेट नाच नचबैत अछि (पेट वाजां-बगडावे)-एहि वचन सभमे बड्ड सारतत्त्व छैक । एहि सम्बन्धमे ततेक कम चिन्तन भेल अछि जे अस्वाद-व्रतक दृष्टिजे खाद्यान्नक चुनाओ लगभग असंभव भऽ गेल अछि । आ, नेनपनहिसँ माता-पिता अधलाह दुलार-मलार कऽ कऽ नेनाकेँ अनेक प्रकारक स्वादसँ परचित करा दैत छथिन आ ओकर देहकेँ बिगाड़ि दैत छथिन, जीहकेँ पिलिया बना दैत छथिन, जाहिसँ पैघ भेलापर लोक शरीरसँ रोगी आ स्वादक दृष्टिसँ अत्यन्त विकारी बुझबामे आबऽ लगैत छथि । एकर कटु परिणाम हमरालोकनि पग-पगपर अनुभव करैत छी । हमरालोकनि बहुत खर्चमे पड़ि जाइत छी, वैद-डाक्टरक दलानपर दौड़बरहा करैत रहैत छी आ शरीर तथा इन्द्रियकेँ अपना मुट्ठीमे रखबाक बदला ओकर चाकर बनि कऽ नाङर-लुल्ह जकाँ भऽ जाइत छी । एकटा दक्ष वैद्यक कथन छनि जे जगतमे ओ एकोटा निरोग-स्वस्थ मनुष्य नहि देखलनि । कनेको स्वाद लेलक कि शरीर भ्रष्ट भेलैक, गड़बड़यलैक आ लगले ओहि शरीरक हेतु उपासक आवश्यकता उत्पन्न भऽ गेलैक ।

एहि विचारधारासँ ककरो घबड़यबाक आवश्यकता नहि छैक। अस्वाद व्रतसँ भयभीत भऽ कऽ ओकरा त्यागबाक सेहो आवश्यकता नहि छैक। जखन हमरालोकनि कोनो व्रत लैत छी तँ तकर ई माने नहि जे तखनेसँ हमरालोकनि ओकर पूरा-पूरी निर्वाहे करऽ लागी । व्रत लेब माने ओकरा मन, वचन आ कर्मसँ मृत्युपर्यन्त इमानदारीक संग पूरा-पूरी निमाहबाक दृढ प्रयत्न करब । कोनो व्रत कठिन छैक, तँ ओकर व्याख्याकेँ ढील कऽ कऽ

हमरालोकनि मनकेँ धोखा नहि दी । अपन सुविधाक हेतु आदर्शक अवक्रमणमे असत्य भरल छैक । हमरालोकनिक पतन थिक । उद्देश्यकेँ स्वतंत्र रूपसँ जानि, कतबो कठिन किएक ने हो, ओहिठाम धरि पहुँचबाक हेतु जी-जानसँ प्रयत्न करबे परम अर्थ थिक-पुरुषार्थ थिक। (पुरुष शब्दक अर्थ केवल नर नहि कऽ कऽ मूल अर्थ करबाक चाही। पुरमे अर्थात् शरीरमे जे रहैत अछि से पुरुष । एहन अर्थ कयलासँ पुरुषार्थ शब्दक उपयोग नर-नारी दुनूक हेतु भऽ सकैत छनि ।) महाव्रत सभकेँ तीनू काल (भूत, भविष्य, वर्तमान) मे पूरा-पूरी पालन करबामे जे समर्थ छथि, हुनका संसारमे किछुओ करब शेष नहि रहि जाइत छनि; ओ भगवान छथि, ओ मुक्त छथि-स्वतंत्र छथि । हमरालोकनि तँ अकिञ्चन, मुक्तिक इच्छा राखऽबला (मुमुक्षु), जनबाक इच्छा राखऽबला (जिज्ञासु), सत्यक आग्रह राखऽवला, सत्य पर जोर देबऽवला आ तकर खोज करऽवला जीव थिकहुँ । तँ गीताक भाषामे हमरालोकनि शनैः-शनैः मुदा तन्द्रारहित रहि कऽ प्रयास करैत रही। से करब तँ कोनो दिन प्रभुक कृपा, हुनक प्रसन्नताक योग्य भऽ जायब आ तखन हमरालोकनिक समस्त रस, भोगक लिलसा सभ जरि जायत ।

हमरा लोकनि जँ अस्वाद-व्रतक महत्व बूझि जाइ तँ तकर पालनक हेतु नव प्रयास करी। ओकरा लेल दिन-राति खयबाक वस्तुएक विचार करैत रहब आवश्यक नहि । खाली सावधानी, जागृतिक बेस आवश्यकता रहैत छैक। एना कयला पर थोड़बे समयमे ई ज्ञात भऽ जायत जे हमरालोकनि कतऽ स्वाद लैत छी आ कतऽ शरीरक पालनक हेतु भोजन करैत छी। ई जखन बुझबामे आबि जाय तखन दृढतापूर्वक-जोर दऽ कऽ हमरालोकनि स्वादकेँ कम करिते जाइ। एहि दृष्टिसँ देखलापर आश्रममे सभक लेल बनल भानस, जे अस्वादक भावनासँ बनल रहैत अछि, बेस सहायक होयत । ओहिठाम की खायब अथवा की रान्हब, तकर विचार हमरालोकनिकेँ नहि करऽ पड़ैत अछि। मुदा जे खाद्य पदार्थ रान्हल गेल हो आ हमरा लेल त्याज्य नहि हो, तकरा भगवानक कृपा बुझि मोनहुमे तकर छिद्रान्वेषण नहि कऽ,

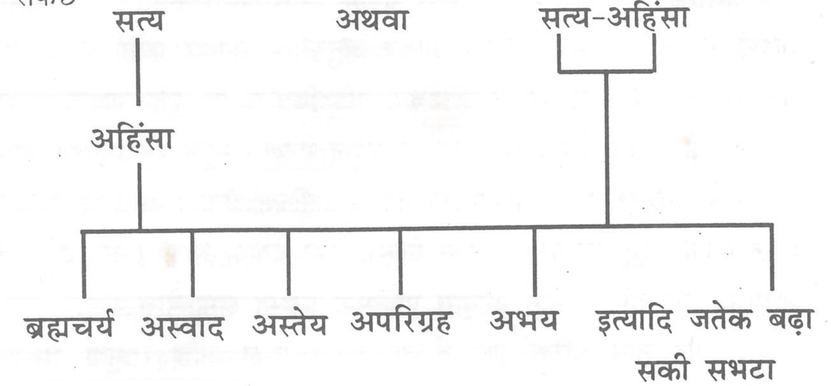
संतोषक संग शरीरक हेतु जतबा आवश्यक हो ततबा खा कऽ उठि जाइ । एहि तरहेँ कयनिहार लोक सहजतापूर्वक अस्वाद व्रतक पालन कऽ लैत छथि। सभक भनसीया हमरालोकनिक बोझकेँ हल्लुक कऽ दैत छथि । ओ हमरालोकनिक व्रतक रखबार बनि जाइत छथि । ओ स्वाद करयबाक दृष्टिसँ किछु नहि बनौताह, खाली समाजक शरीरक पोषणक हेतुटा भोजन रन्हताह। आदर्श दशामे तँ वस्तुत: आगिक आवश्यकता कमसँ कम अथवा एकदमे नहि अछि। सूर्यक रूपमे महाअग्नि जे वस्तु रन्हैत छथि, ओहीमे सँ अपन खयबाक योग्य वस्तु हमरालोकनिकेँ ताकि लेबाक चाही । आ एहि तरहेँ सोचला पर मानव प्राणी खाली फल खायबला अछि, से सिद्ध भऽ जाइत अछि । मुदा एतऽ एतेक गंभीर चिन्तनमे जयबाक आवश्यकता नहि। एहिठाम तँ हमरालोकनिकेँ अस्वाद व्रत की थिक, ओहिमे कोन-कोन कष्ट छैक आ नहि छैक तथा ओकर ब्रह्मचर्यक पालनसँ कतेक निकटक सम्बन्ध छैक, सैह विचारबाक छल ।

एतेक बुझि गेला उत्तर समस्त व्यक्ति अपन शक्तिक अनुसार एहि व्रतकेँ पार लगयबाक शुभ प्रयत्न करथि ।

अस्तेय (अचौर्य)

ता. 19.08.30 य.मं.
मंगल-प्रभात

आब हम अस्तेय व्रत पर अबैत छी । गंभीरतासँ विचार कयला उत्तर हमरालोकनिकेँ देखि पड़त जे सभटा व्रत सत्य आ अहिंसा अथवा सत्येक पेटमे समाहित अछि । ओकरा सभकेँ एहि प्रकारेँ देखाओल जा सकैछ-



की तँ सत्यसँ अहिंसा निस्सरित होइत अछि से मानी अथवा ई मानी जे सत्य-अहिंसा युगल थिक । दूनू एके गोट वस्तु थिक मुदा तैयो हमरालोकनिक मन पहिलेक दिस लेओत भऽ जाइत अछि। आ अन्तिम स्थिति तँ युगलसँ-द्वन्द्वसँ इतर अछि। परम सत्य एकसरे स्थिर रहैत छैक। सत्य साध्य थिक, अहिंसा साधन थिक। अहिंसा की थिक, से हमरालोकनि जनैत छी, ओकर पालन कठिन छैक । सत्यक तँ हमरालोकनि केवल किछु अंशेटा बुझैत छियैक, ओकरा सम्पूर्ण रूपमे जानब देहधारीक हेतु कठिन छैक जेना कि अहिंसाक सम्पूर्णतामे पालन देहधारीक हेतु कष्टसाध्य छैक ।

अस्तेयक अर्थ छैक-चोरि नहि करब । कोनो मनुष्य ई नहि बाजत जे जे केओ चोरी करैत छथि, से सत्यकेँ बुझैत छथि अथवा प्रेम धर्मक पालन करैत छथि । तथापि चोरीक छोट-मोट अपराध तँ हमरालोकनि सभ गोटे जान-अनजानमे करिते छी। बिनु अनुमतिक ककरो कोनो वस्तु लऽ लेब

तँ चोरी अछिये । मुदा जकरा अपन मानैत अछि-आदमी ओकरो चोरबैत अछि जेना कोना पिता अपन नेना सभक जनतबमे बिनु देने, ओकरा सभकेँ नहि बूझऽ देबाक इच्छासँ चोरा कऽ कोनो वस्तु खा लैत अछि। आश्रमक भंडार हमरालोकनिक सभक थिक से कहल जा सकैत छैक, मुदा ओहिमे सँ नुका कऽ जँ केओ गुड़क ढेकुरीयो लऽ लैत अछि, तँ ओ चोर थिक । एकटा नेना दोसराक कलम लऽ लैत छैक तँ ओ चोरी करैत छैक । भने दोसर आदमी जनितो हो तथापि बिना ओकर अनुमतिक ओकर कोनो वस्तु लऽ लेब चोरीये थिक । फल्लाँ वस्तु ककरो नहि थिकैक, से बूझि ओकरा ग्रहण कऽ लेब सेहो चोरी थिक अर्थात् राहमे पड़ल भेटल वस्तुक हम मालिक नहि छी, ओहि प्रदेशक राजा अथवा तंत्र ओकर मालिक छैक । आश्रमक निकट भेटल कोनो वस्तु आश्रमक मंत्रीक जिम्मा लगा देबाक थिक । जँ ओ वस्तु आश्रमक नहि हो, तँ मंत्री ओकरा पुलिसक जिम्मा लगा देथि ।

एहि ठाम धरिक ज्ञान तँ अपेक्षाकृत सरले अछि । मुदा अस्तेय एहिसँ बहुत आगू धरि जाइत अछि। कोनो वस्तुविशेषक हमरा आवश्यकता नहि अछि, तथापि ओ जकरा कब्जामे छैक, तकर अनुमति प्राप्त कइयो कऽ लऽ लेनाइ चोरी थिक। जकर आवश्यकता नहि हो, एहन एकोटा वस्तु हमरालोकनिकेँ नहि लेबाक चाही । संसारमे एहि प्रकारक चोरी बहुधा खयबा-पीबाक वस्तुमे होइत छैक। हमरा अमुक फल पचैत नहि अछि, तथापि हम ओकरा खा लैत छी अथवा हमरा जतेक खयबाक चाही, ताहिसँ बेसी खा लैत छी, तँ से चोरी थिक । वास्तवमे अपन पाचनशक्ति कतेक अछि, से बहुधा मनुष्य जनिते नहि अछि आ लगभग हमरालोकनि सभ गोटे जतेक होयबाक चाही, ताहिसँ बेसी पाचनशक्ति बनौने रहैत छी । एहिसँ हमरालोकनि अनजानेमे चोर बनि जाइत छी । विचार कयला उत्तर हमरालोकनि देखब जे अपन बहुतो पाचनशक्ति हम सभ कम कऽ सकैत छी। अस्तेय व्रत पालन कयनिहार एकक बाद एक अपन पाचनशक्ति कम करैत चल जयताह। एहि जगतमे बहुतो प्रकारक दरिद्रता एहि अस्तेयक भंग भेने उत्पन्न भेलैक अछि।

ऊपर जे चोरी सभ कहल गेल अछि से सभ बाहरी अथवा देहसँ सम्बन्धित चोरी भेल । एहूसँ अत्यन्त मेही-सूक्ष्म आ आत्माकेँ अध:पतित करऽवला अथवा राखऽवला चोरी मानसिक, मनसँ करऽवला होइछ । मनसँ हम कोनो वस्तुकेँ पयबाक इच्छा करी अथवा ओहि पर सिहाइ तँ से चोरी थिक । पैघ होथु कि नेना, नीक वस्तु देखि कऽ जँ सिहाइत छथि तँ से मनक चोरी थिक । व्रती शरीरसँ तँ भोजन ग्रहण नहि करय, मुदा दोसराकेँ खाइत देखि मन द्वारा स्वादक मजा लिअय, तँ ओ चोरी करैत अछि आ अपन व्रतकेँ भंग करैत अछि । उपवास राखऽवला जे मनुष्य उपवास तोड़ैत काल खाद्यक चिन्तन करैत रहैत अछि, से अस्तेय आ उपवास दुनूकेँ भंग करैत अछि, से कहल जा सकैत छैक। अस्तेय-व्रत पालनिहारकेँ भविष्यमे पयबाक वस्तुक विचारक मोइनमे नहि पड़बाक चाहियनि । बहुतोक चोरीक मूलमे एहन अधलाह चिन्तने पाओल जायत । आइ जे वस्तु केवल भावनामे अछि, तकरा पयबा लय काल्हि हम सभ नीक-अधलाह उपाय करब शुरू कऽ देब।

आ जहिना वस्तुक चोरी होइत छैक तहिना विचारक चोरी सेहो होइत छैक । कोनो नीक विचार अपना मनमे नहि उठल हो, तथापि हमहीं सभसँ पहिने ओ चिन्तन कयल से बात जे मनुष्य अहंकारपूर्वक बजैत् अछि, से विचारक चोरी करैत अछि । संसारक इतिहासमे एहन चोरी बहुतोक विद्वानलोकनि कयने छथि आ आइयो से चलिये रहल छैक । मानि लिअऽ जे हम आन्ध्रप्रदेशमे एकटा नव किसिमक चरखा देखल । ओहने चरखा हम आश्रममे बनाबी आ तखन कहियैक जे ओ हमरे आविष्कार थिक तँ एहिमे स्पष्टे दोसराक आविष्कारक चोरी कऽ रहल छी, झूठ तँ बजिते छी ।

तँ अस्तेय-व्रतक पालन करऽवलाकेँ बेस नम्र, गहन विचारशील, अत्यधिक सावधान आ अत्यन्त सरल रहऽ पड़ैत छनि ।

●

अपरिग्रह

ता. 26.08.30 य.म.
मंगल-प्रभात

अपरिग्रहक सम्बन्ध अस्तेयसँ छैक । जे वस्तु वास्तवमे चोराओल नहिञो गेल अछि मुदा ओकर आवश्यकता नहिञो रहलापर ओकर जमा कयलासँ ओ चोरियेक वस्तु जकाँ भऽ जाइत अछि। परिग्रहक अर्थ अछि संचय अर्थात् जमा करब। सत्यक अन्वेषी, अहिंसाक व्रती परिग्रह नहि कऽ सकैछ । परमात्मा परिग्रह नहि करैत छथि । अपना लेल जरूरी वस्तु ओ प्रतिदिन उत्पादित कऽ लैत छथि । तेँ जँ हमरालोकनि हुनकापर भरोसा राखी तँ हमरालोकनिकेँ गमबाक चाही जे हमर आवश्यकताक वस्तु ओ प्रतिदिन दैत छथि, दैत रहताह । सूफी संत आ भक्तलोकनिक यैह अनुभव छनि । प्रतिदिनक आवश्यकताक बरोबरि प्रतिदिन उत्पादित करबाक ईश्वरक नियमकेँ की तँ हम सभ जनिते ने छी अथवा जानिञो कऽ ओहि पर अमल नहि करैत छी । तेँ संसारमे असमानता आ ताहिसँ उत्पन्न क्लेश हमरालोकनिकेँ सहऽ पड़ैत अछि । अमीरक ओहिठाम कतोक वस्तु सभ अनेर-धुनेर जकाँ पड़ल रहैत छैक । अनवधानताक कारणेँ हेरा-भुतिया जाइत छैक, अधलाह भऽ जाइत छैक जखन कि ओहि वस्तुक कमीक कारणेँ करोड़क-करोड़ लोक टौआइत रहैत छथि, भूखेँ मरैत छथि, ठंढी सँ घसमोरल रहैत छथि । सभ केओ जँ अपन आवश्यकतेक वस्तु मात्रक संग्रह करथि तँ ककरो कमीक अनुभव होयबे ने करतैक आ सभकेँ सन्तोष होयतैक। आइकाल्हि तँ दुनू दिसक लोक अभावक अनुभव करैत छथि । करोड़पति अरबपति होमऽ चाहैत अछि, तथापि ओकरा सन्तोष नहिञे होइत छैक । कंगाल करोड़पति होमऽ चाहैत अछि । कंगालकेँ भरिपेट भोजनटा भेटि गेने संतोष भऽ जाइत होइक, से नहि देखल जाइछ । तथापि ओकरा भरि पेट भोजन करबाक अधिकार छैक आ ओतेक पयबा योग्य ओकरा बना देब समाजक कर्त्तव्य थिकैक। तेँ गरीबक आ अपन सन्तोषक हेतु मातवरलोकनिकेँ प्रयास करबाक चाहियनि ।

ओलोकनि अपन बहुत अधिक परिग्रहक त्याग करथि तँ कंगाल सभकेँ अपन आवश्यकताक वस्तु आरामसँ भेटि जा सकतनि आ दुनू पक्षकेँ

संतोषक पाठ सिखबाक अवसर भेटि जयतनि । आत्यन्तिक आदर्श अपरिग्रह तँ ओकरे भऽ सकैत छैक जे मन आ कर्मसँ दिगम्बर अछि । माने ई जे ओ चिड़ंइ जकाँ बिनु घरक, बिनु वस्त्र ओ अन्नक चलैत रहत । अन्न तँ ओकरा प्रतिदिन आवश्यक होयतैक, से भगवान जुटबैत रहथिन। एहि सन्यस्त दशाकेँ बिरले आदमी प्राप्त कऽ सकैत छथि । प्रत्येक साधारण कोटिक सत्याग्रही आ जिज्ञासुलोकनि आदर्शकेँ विचार-कोटिमे रखैत सदिखन अपन परिग्रहक जाँच करैत चलथि आ ओकरा कम करैत चलथि । वास्तविक सुधार आ नीक सभ्यताक लक्षण परिग्रह बढ़ायब नहि थिक, प्रत्युत् जानि-बूझि कऽ आ अपन इच्छासँ ओकरा कम करब थिक । जेना-जेना हमरालोकनि परिग्रह घटबैत जाइत छी, तेना-तेना वास्तविक सुख आ संतोष बढ़ैत जाइत अछि, सेवाक शक्ति बढ़ैत जाइत अछि । एहि तरहेँ चिन्तन कयलापर आ कार्यरूप देला पर हमरालोकनि देखब जे आश्रममे हमरालोकनि बहुतो एहन संग्रह करैत छी जकर आवश्यकता हमरालोकनि सिद्ध नहि कऽ सकब । आ एहन अनावश्यक परिग्रहसँ पड़ोसीकेँ चोरि करबाक लोभमे फँसबैत छियैक। अभ्याससँ आदति लगौलासँ लोक अपन बुभुक्षाकेँ घटा सकैत छथि आ जेना-जेना से घटैत जाइत छैक, तेना-तेना ओ सुखी, शान्त आ सभ प्रकारेँ स्वस्थ होइत जाइत छथि । केवल शरीर अर्थात् आत्माक दृष्टिसँ चिन्तन कयला उत्तर देहो परिग्रह थिक । भोगक इच्छासँ हमरालोकनि शरीरक आवरण बनौलहुँ अछि आ तकरा सुरक्षित कयने रहैत छी । जँ भोगेच्छा एकदम कम भऽ जाय तँ शरीरकेँ रखबाक इच्छे समाप्त भऽ जाय अर्थात् मनुष्यकेँ नव शरीर प्राप्त करबाक आवश्यकते नहि रहैक । आत्मा सभ ठाम पसरयवला, सर्वव्यापी होयबाक कारणेँ शरीर रूप पिजड़ामे किएक बन्न होयत ? पिजड़ाकेँ कायम रखबाक हेतु हमरालोकनि अधलाह कर्म किएक करी ? अनका सभकेँ किएक नष्ट कऽ दी ? एहि तरहेँ विचार कयला उत्तर हमरालोकनि अन्तिम त्याग भाव धरि जूमि जा सकैत छी आ यावत् धरि शरीर अछि तावत् धरि ओकर उपयोग केवल सेवा कार्यक हेतु करब सीखैत छी, एतऽ धरि जे सेवे ओकर असली खोराक भऽ जाइत छैक । ओ खाइत

अछि, पीबैत अछि, जिराइत अछि, पड़ैत अछि, बैसैत अछि, जगैत अछि, सुतैत अछि से सभटा सेवाक हेतु होइत छैक । एहि सेवासँ उत्पन्न सुख असली सुख थिक । से कयने मनुष्य अन्तमे सत्यक दर्शन कऽ पबैत अछि। हमरा लोकनिकेँ अपन परिग्रहक सम्बन्धमे एही दृष्टिसँ सोचबाक चाही ।

ई स्मरणीय अछि जे जेना वस्तुक अपरिग्रह होयबाक चाही तहिना विचारोक अपरिग्रह होयबाक चाही । जे मनुष्य अपन मस्तिष्कमे बेकारक ज्ञान भरने रहैत अछि से परिग्रही थिक । जे विचार हमरा सभकेँ ईश्वरसँ विमुख करैत अछि, घुमा लैत अथवा ईश्वर दिस उन्मुख नहि करबैत अछि, से सभटा परिग्रहमे गनल जायत आ तेँ त्याज्य अछि । ज्ञानक एहन व्याख्या भगवान गीताक तेरहम अध्यायमे देने छथि। से एहि अवसर पर चिन्तनीय अछि। अमानित्व आदिकेँ गनौला उत्तर भगवान कहने छथि जे तदतिरिक्त जे किछु अछि से सभ अज्ञान थिक। जँ ई वचन सत्य अछि आ साँच तँ थीके-तँ आइ हमरालोकनि एहन बहुतो किछु जे ज्ञानक नामसँ जमा करैत छी, से अज्ञाने थिक आ ओहिसँ लाभक बदला हानिए होइत छैक, ओहिसँ माथ घूमैत छैक आ अन्ततः ओ रिक्त भऽ जाइत छैक; ओहिसँ असंतोष पसरैत छैक आ अधलाह कर्म बढ़ैत छैक ।

एहिमे सँ केओ जड़ताक अर्थ कहियो ने निकालथि । हमरालोकनिक प्रत्येक पल आ क्षण प्रवृत्तिपरक होयबाक चाही । मुदा से प्रवृत्ति सात्विक होयबाक चाही, सत्य दिस लऽ जायवला होयबाक चाही। जे सभ सेवाधर्मकेँ ग्रहण कयने छथि, से एको क्षण भरिक हेतु जड़ दशामे नहि रहि सकैत छथि। एहिठाम तँ सार-असारक विवेक सिखबाक बात छैक । सेवापरायण मनुष्यकेँ ई विवेक सहजे प्राप्त भऽ जाइत छनि ।

●

अभय

ता. 02.09.30

मंगल-प्रभात

गीताजीक सोलहमक अध्यायमे दैवी संपतक चर्चा करैत भगवान एकर गनती प्रथमे दैवी संपतक रूपमे कयने छथि। ई श्लोक रचनाक सुविधाक कारणे भेल छैक कि वस्तुतः अभयक पहिल स्थान होयबाक चाही, ताहि विवादमे हम नहि पड़ब । एकर निर्णय करबाक सामर्थ्यो हमरामे नहि अछि। हमरा जनैत जँ अभय केँ पहिलो स्थान भेटलैक अछि तँ से उचिते छैक। बिनु अभयक दोसर संपत सभ नहि भेटि पओतैक । बिना अभयक सत्यक अन्वेषण कोना होयत? बिना अभयक अहिंसाक पालन कोना होयत । 'हरिनो मारग छे शूरानो, नहीं कायरनुं काम जोने' (भगवानक मार्ग शूर-वीरक मार्ग थिकनि, एहिमे डेरबुकक कोनो काज नहि छैक।) सत्ये हरि, वैह राम, वैह नारायण, वैह वासुदेव छथि। कायर माने डेरायल, भयभीत; शूर माने भयसँ रहित, तरुआरिसँ सज्जित नहि । तरुआरि बहादुरीक चिह्न नहि थिक, ओ तँ डेरबुक लोकक चिह्न थिक।

अभयक अर्थ छैक समस्त बाहरी भयसँ मुक्ति। मृत्युक भय, संपत्ति लुटि जयबाक भय, सर-सम्बन्धी विषयक भय, रोगक भय, हथियार चलबाक भय, प्रतिष्ठाक भय, ककरो अधलाह लगयबाक-आघात पहुँचयबाक भय। एहि तरहेँ भयक सूची हमरालोकनि जतेक चाही, नमरा लऽ सकैत छी। सामान्यतः कहल जाइत अछि जे एकटा मृत्युक भयटाकेँ जीति लेलक कि सभटा भयकेँ जीति लेलक। मुदा से युक्तियुक्त नहि । बहुतो लोक मृत्युक भयकेँ छोड़ि दैत छथि, तथापि ओ विभिन्न प्रकारक दुःखसँ पड़ाइत रहैत छथि । किछु लोक अपने तँ मरबाक हेतु तैयार रहैत छथि मुदा सर-सम्बन्धीक वियोगकेँ सहि नहि पबैत छथि। कोनो कंजूस ई सभटा छोड़ि देत, शरीरो छोड़ि देत, मुदा जमा कयल सम्पत्ति छोड़ैत हिचकिचायत। कोनो व्यक्ति अपन अर्जित प्रतिष्ठा बनौने रहबाक हेतु अनेक प्रकारक नीक-अधलाह करबाक हेतु तत्पर भऽ जायत आ करत। केओ सांसारिक निन्दाक भयसँ सोझ मार्ग जनितहुँ ओहिपर चलबामे हिचकिचायत । सत्यक खोज

कयनिहारकेँ एहि समस्त प्रकारक भयक त्याग करबाक अतिरिक्त कोनो उपाय नहि छनि। हुनकालोकनिकेँ हरिश्चन्द्र जकाँ बर्बाद होयबाक हेतु तैयार रहबाक चाहियनि। हरिश्चन्द्रक कथा भने मनगढ़न्त हो मुदा ओहिमे समस्त आत्मकल्याण चाहनिहारक अनुभव भरल-पड़ल अछि । तँ ओहि कथाक मूल्य कोनो ऐतिहासिक कथाक अपेक्षा अनन्त गुणोसँ बेसी अछि। हमरा सभकेँ ओकरा अपना चिंतनमे रखबाक चाही आ ओहिपर ध्यान लगयबाक चाही।

अभय व्रतक पूर्णत: पालन करब करीब-करीब असम्भवे अछि। समस्त प्रकारक भयसँ मुक्ति तँ वैह मनुष्य पाबि सकैत अछि जकरा आत्माक दर्शन भेल होइक। अभय सावधान दशाक अन्तिम पराकाष्ठा थिक। निश्चय कयलासँ, निरन्तर प्रयत्न कयलासँ आ आत्मामे श्रद्धा बढ़लासँ अभयक मात्रा बढ़ि सकैत छैक । हम प्रारम्भेमे कहि चुकल छी जे हमरा लोकनिकेँ बाहरी भयसँ मुक्ति पयबाक अछि। भीतर जे शत्रु अछि तकरा सभसँ तँ डेराइये कऽ चलबाक अछि। काम, क्रोध आदिक भय वास्तविक भय थिक । ओकरा सभकेँ जीति ली तँ बाहरी भयक कष्ट स्वयं समाप्त भऽ जायत। सभटा भय देहकेँ लऽ कऽ अछि। जँ देहक प्रति ममत्व छूटि जाय, तँ सहजहि अभय भेटि जाय। एहि तरहें विचारला उत्तर हमरालोकनि देखब जे सभटा भय हमरालोकनिक बनौआ उपजा थिक। पाइ कौड़ीसँ, शरीरसँ अहम्मन्यता जँ निकालि दी तँ भय कतऽ रहि जायत ? तेन त्यक्तेन भुंजीथा: (ओकर त्याग करैत भोग करू), ई रामवाण वचन थिक। सर-सम्बन्धी, पाइ-कौड़ी, देह, जहिना-तहिना रहओ । ओकर सभक सम्बन्धमे हमरालोकनिकेँ अपन कल्पना बदलबाक होयत। ओ हमर नहि थिक। ओ ईश्वरक थिकनि । हमहूँ हुनके थिकहुँ। एहि संसारमे हमर एहन किछु अछिये नहि। तखन फेर भय कथीक ? तँ हम ओकर रक्षकटा बनी, ईश्वर ओकर रक्षाक हेतु आवश्यक वस्तु आ शक्ति हमरा प्रदान करताह। एहि तरहेँ हम स्वामीभाव छोड़ि सेवक बनी, शून्य जकाँ बनि कऽ रही, तँ सहजतापूर्वक समस्त भयकेँ जीति लऽ सकैत छी, सहजतापूर्वक शान्ति पाबि सकैत छी आ सत्यनारायणक दर्शन कऽ सकैत छियनि ।

●

अस्पृश्यता-निवारण

ता. 09.09.30
मंगल-प्रभात

ईहो व्रत अस्वाद-व्रते जकाँ नव अछि आ कनेक कठाइनो लागत। ई जतबे अनकट्ठल ततबे जरूरी सेहो। अस्पृश्यता माने छुआ जयबाक परिकल्पना । अखा भगत ठीके कहने छथि-'आभडछेट अदकेरुं अंग' अर्थात् अछोपक परिकल्पना छठम आङुर जकाँ अकामिल अछि। ई जतऽ-ततऽ धर्मक नाम पर किंवा धर्मक लाथेँ धार्मिक काजमे व्यवधान उत्पन्न करैत अछि आ धर्मकेँ विकृत करैत अछि । जँ आत्मा एके थिक, भगवान एके छथि तँ अछोप केओ नहि। मेहतर, डोम, चमार अछोप मानल जाइत छथि, मुदा अछोप छथि नहि। ओना मुरदो अछोप नहि होइत अछि, ओ सम्मान आ करुणा, प्रतिष्ठा आ दयाक योग्य होइत अछि। कोनो मुरदाकेँ छूलाक बाद अथवा तेल लगौलाक बाद किंवा क्षौरकर्म कयला-करयलाक बाद जँ लोक नहाइत अछि तँ से केवल स्वास्थ्येक दृष्टिकोणसँ । मुरदाकेँ छूलाक बाद अथवा तेल लगौलाक बाद जँ केओ स्नान नहि करैत अछि, तँ ओ मलिन भने कहल जाय, पातकी नहि अछि, पापी नहि अछि । ओना तँ माय भने नेनाक मल उठौलाक बाद जाधरि स्नान नहि करथि अथवा कूरुड़-आचमनि नहि करथि ताधरि अछोपे बूझल जाथि; मुदा जँ नेना स्नेहपूर्वक खेलैत-धूपैत छूबि लेतनि तँ ओहि नेनाकेँ स्पर्शदोष नहि लगतैक आ ने ओकर आत्मा सैह मलिन होयतैक । मुदा जे सभ घृणाक वशीभूत भऽ मेहतर, डोम, चमार आदिक नामे चीन्हल जाइत छथि, से तँ जन्मेसँ अछोप मानल जाइत रहल छथि। भने ओ सैयनो साबुनसँ देहकेँ रगड़ने होथि, भने ओ वैष्णव बाना धारण कयने होथि, माला-कंठी धारण करैत होथि, भने ओ प्रतिदिन गीतापाठ करैत होथि आ लेखकक व्यवसाय करैत होथि, तथापि ओ सभ अछोप मानल जाइत छथि । एहि तरहेँ जे धर्म मानल जाइत अछि अथवा व्यवहारमे आनल जाइत अछि से धर्म नहि थिक, अधर्म थिक आ विनष्ट होयबा योग्य अछि। अस्पृश्यता- निवारणकेँ व्रतक रूपमे स्थापित कऽ हम सभ ई विज्ञापित करैत

छी जे छूताछूत-विमर्श हिन्दू धर्मक अंग नहि थिक, ततबे नहि, अपितु ओ हिन्दू धर्मभे पैसल एकटा सड़नि थिक, अन्धविश्वास थिक, पाप थिक आ ओकरा नष्ट करब प्रत्येक हिन्दूक धर्म थिकनि, हुनक परम कर्तव्य थिकनि। तेँ जे केओ ओकरा पाप बूझैत छथि, से तकर प्रायश्चित करथि आ नहि किछु तँ प्रायश्चितेक रूपमे प्रत्येक बुझनुक हिन्दू अपन धर्म बूझि प्रत्येक अछोप मानय जायवला बन्धु आ बान्धवीकेँ समेटथि, नेह-छोहसँ आ सेवाभावसँ ओकर स्पर्श करथि, ओकर स्पर्श भेलापर अपनाकेँ पवित्र भेल मानथि, अछोपक दुःख भगाबथि। ओ लोकनि वर्षक वर्षसँ दमित कयल गेल छथि, तेँ हुनकालोकनिमे अशिक्षा-अज्ञान आदि दोष आबि गेल छनि, तकरा सभकेँ धैर्यपूर्वक हटयबामे हुनकालोकनिक सहायता करथि आ एहिना करबाक हेतु आनो हिन्दूकेँ जनाबथि, प्रेरित करथि। एहि दृष्टिसँ अस्पृश्यताकेँ देखला उत्तर ओकरा बहटारबामे जे सांसारिक किंवा राजनीतिक परिणाम सभ समाहित छैक, तकरा सभकेँ व्रतक धारण कयनिहार तुच्छ बुझताह। ई अथवा एहन सफलता भेटय वा नहि, तथापि अस्पृश्यता-निवारणकेँ जे अपन व्रत मानि लेने छथि, ओ सभ धर्म बूझि कऽ अछोप सभकेँ अङेजताह। सत्य इत्यादिक आचरण करैत हमरालोकनि सांसारिक फलपर विचार नहिञे करी। सत्यक आचरण ओहि व्रतधारीक हेतु कोनो उपाय नहि, ओ तँ हुनक देहक संग जुड़ल छनि, हुनक स्वभाव छनि। तहिना अस्पृश्यता-निवारण सेहो ओहन व्रतधारीक हेतु उपाय नहि छनि, हुनक स्वभाव छनि। एहि व्रतक महत्व बुझला उत्तर हमरालोकनिकेँ पता लागत जे ई अस्पृश्यताक सड़नि खाली डोम-मेहतर मानल जायवलाक सम्बन्धटामे हिन्दू समाजमे पैसल छैक, से नहि छैक। सड़निक स्वभाव होइत छैक जे ओ पहिने राइक दानाक बराबर देखि पड़त, बादमे पहाड़क रूप लऽ लेत आ अन्तमे जतऽ प्रवेश कऽ जायत तकर नाशे कऽ देत । अस्पृश्यता सेहो सैह थिक । ई अस्पृश्यता दोसर धर्मक लोकक संग व्यवहारमे आनल जाइत अछि, दोसर सम्प्रदायक संग व्यवहृत होइत अछि, एके सम्प्रदायक भीतर सेहो पैसि गेल अछि, एतऽ धरि जे किछु

लोक तँ अस्पृश्यताकेँ पोसैत-पोसैत एहि पृथ्वीपर भार स्वरूप भऽ गेल छथि। ओ सभ स्वयंकेँ सम्हारबासँ, स्वयंकेँ मलारबा किंवा बचबैत रहबासँ, स्नान-ध्यान, कलउ-पनपियाइ करबासँ तँ अवकाशे नहि पबैत छथि आ ईश्वरकेँ बिसरि ईश्वरक नामसँ अपनेकेँ पूजऽ-पुजबऽ लगैत छथि ।

तेँ अस्पृश्यताकेँ मेटाबयबला लोक खाली डोम-मेहतरटाकेँ अङ्गीकृत कऽ संतुष्ट नहि होयताह; जाधरि समस्त जीवकेँ ओ अपनामे दर्शन नहि करताह आ अपनाकेँ जीवमात्रमे एकाकार नहि कऽ देताह, अभिन्न नहि कऽ लेताह, ताधरि शान्त होयबे नहि करताह । अस्पृश्यता निवारण अर्थात् समस्त जीव-जगतक संग मैत्रीभाव, ओकर चाकर बनब । एहि तरहेँ अस्पृश्यता-निवारण आ अहिंसाक युग्म बनि जाइत छैक आ वास्तवमे छैको । अहिंसाक माने अछि जीवमात्रक हेतु पूर्ण स्नेह । अस्पृश्यता-निवारणक सेहो सैह माने अछि। समस्त जीवक संग भेदभावकेँ मेटा देब अस्पृश्यता निवारण थिक । एहि तरहेँ अस्पृश्यताकेँ देखला उत्तर पता लागत जे ई दोष कने-मने सौंसे संसारमे पसरल छैक । एहि ठाम हम ओकर विचार हिन्दू धर्मक सड़निक रूपमे कयल अछि, किएक तँ ई हिन्दू धर्मभे धर्मक स्थान हथिया लेने अछि आ धर्मक बहन्ने लाखक लाख अथवा करोड़क करोड़ लोकक अवस्था गुलाम सदृश बना देलक अछि ।

●

श्रमव्ययी आजीविका

ता. 16.09.30
मंगल-प्रभात

मेहनत-मजदूरी प्रत्येक मनुष्यक हेतु वांछनीय छनि । ई तथ्य हमरा पहिल बेर टाल्सटायक एक गोट निबन्ध पढ़ला उत्तर मोनमे बसि गेल । एतेक स्पष्ट रूपेँ ई बात जनबासँ पूर्वहु रस्किनक **अन्टू दिस लास्ट** (सर्वोदय) पढ़लाक बाद एहिपर हम लगले अमल करऽ लागल रही । श्रमव्ययी आजीविका अँग्रेजी शब्द **ब्रेड लेबर**क रूपान्तर थिक । ब्रेड लेबरक शब्दानुवाद थिक दालि-रोटीक हेतु परिश्रम । रोटीक हेतु प्रत्येक मनुष्यकेँ मजूरी करबाक चाहियनि, देहकेँ (डाँड़केँ) झुकयबाक चाहियनि, से भगवानक नियम थिकनि । ई मौलिक रूपेँ टाल्सटायक अनुसन्धान नहि थिक, प्रत्युत् हुनकोसँ कम ख्यात रूसी रचनाकार बोन्दरेव्हक (टी.एम. बोन्डरेव्ह) थिकनि । टाल्सटाय ओकरा सुप्रचारित कयलनि आ स्वयं व्यवहारमे अनलनि। हमर आँखि एकर झाँकी भगवद्गीताक तेसर अध्यायमे करैत अछि। यज्ञ कयने बिनु जे अन्न ग्रहण करैत अछि से चोरीक अन्न खाइत अछि, एहन कठोर श्राप यज्ञ नहि करयवलाकेँ देल गेल छैक । एहि ठाम यज्ञक अर्थ श्रमव्ययी आजीविका किंवा दालि-रोटीक हेतु श्रम सैह भऽ सकैत छैक । जे हो, हमर एहि व्रतक जन्म एही तरहेँ भेल अछि । बुद्धियो हमरालोकनिकेँ ताही दिस लऽ जाइत अछि । जे श्रम नहि करैत अछि, तकरा खयबाक कोन अधिकार छैक ? बाइबिल कहैत छैक: तोँ अपन पसीना बहाकऽ आजीविका कमा आ खो । करोड़पतियो जँ अपन पलंगपर ओंघराइत रहय आ ओकरा मुँहमे केओ कओर दैक, तखन खाय, तँ ओ बेसी दिन धरि नहि खा सकैत अछि; एहिमे ओकरा आनन्दो नहि अयतैक । तेँ ओ कसरत आदि कऽ कऽ भूख लगबैत अछि तथा खाइत तँ अछि अपने मुँह-हाथ हिला-डोला कऽ। एहिना कोनो ने कोनो रूपमे राजा ओ रंक दुनूकेँ अंगक कसरत करहि पड़ैत छैक, तखन आजीविका उत्पन्न करबाक श्रम सभ केओ किएक ने करथि? ई सवाल सहज रूपेँ सामने अबैत अछि । किसानकेँ खुलल हवामे टहलबाक किंवा कसरत करबाक हेतु केओ कहैत नहि छैक आ संसारक नब्बे प्रतिशतसँ अधिक लोकक गुजर खेती पर होइत छनि। बाँकी दस प्रतिशत लोक जँ तकर देखाऊँस करथि, तँ संसारमे कतेक सुख, कतेक शान्ति आ कतेक आरोग्य पसरि जाय ? आ जँ खेतीक संग बुद्धियो मिलि जाय, तँ खेतीसँ सम्बन्ध राखऽवला बहुतोक विपत्ति सहजहिं नष्ट भऽ जायत । पुनः जँ एहि श्रमव्ययी आजीविकाक निरापद कानूनकेँ सभ गोटे सम्मान करऽ लागथि, तँ ऊँच-नीचक भेद समाप्त भऽ जाय । आब तऽ जतऽ ऊँच-नीचक गंधो नहि छलैक ततहु अर्थात् वर्ण-व्यवस्थहुमे सन्हिया गेलैक अछि । मालिक आ मजदूरक भेद सामान्य ओ मान्य भऽ गेल छैक आ गरीब आदमी धनवानसँ द्वेष करैत अछि । जँ सभ लोक आजीविकाक हेतु श्रम करथि, तँ ऊँच-नीचक भेद नहि रहय आ तैओ जँ धनिक लोक रहताह तँ ओ सभ अपनाके मालिक नहि अपितु ओहि सम्पत्तिक चौकीदार अथवा ट्रस्टी बुझताह आ ओकर बेसी उपयोग केवल लोक सेवाक हेतु करताह ।

जनिका अहिंसाक पालन करबाक छनि, सत्यक भक्ति करबाक छनि, ब्रह्मचर्यकेँ प्रकृत बनयबाक छनि, हुनकालोकनिक लेल तँ श्रमव्ययी आजीविका रामवाण सदृश भऽ जाइत छनि । वास्तवमे ई श्रम तँ किसानोमे होइतहि छैक। मुदा सभ केओ खेती नहि कऽ सकैत छथि, से परिस्थिति तँ सम्प्रति अछिए। तेँ खेतीक आदर्शकेँ ध्यानमे रखैत खेतीक बदला आदमी भने दोसर प्रकारक मजूरी करय, जेना-कताइ, बुनाइ, कठकम, लोहकम आदि । सब गोटेकेँ स्वयं तँ हलखोर बनिये जयबाक चाहियनि । जे खायत से हगबे करत। जे हगय से अपन गुँहकेँ माटिमे गाड़ि दिअय, से उत्तम प्रथा थिक। जँ से नहिजे भऽ सकय, तँ प्रत्येक सम्बन्धिक अपन एहि कर्त्तव्यक पालन करथि । जाहि समाजमे हलखोरी पृथक् वृत्ति मानल गेलैक अछि, ततऽ कोनो पैघ दोष प्रवेश कऽ गेल छैक, से कतोक वर्ष पूर्वहिसँ हमरा बुझना जाइत रहल अछि। एहि जरूरी आ स्वास्थ्यवर्द्धक (आरोग्य-पोषक)

काजकेँ सभसँ नीच काज पहिले-पहिल के मानलक तकर इतिवृत्त हमरा सभक लग नहि अछि । जे मानलक से हमरा सभक उपकार तँ नहिञे कयलक । हमरालोकनि सभ गोटे मेहतर थिकहुँ, से भावना हमरालोकनिक मनमे नेनपनहिसँ जमि जयबाक चाही आ तकर सरल उपाय ई छैक जे जे सभ बुझनुक छथि से श्रमव्ययी आजीविकाक आरम्भ पयखानाक सफाइसँ करथु। जे सभ गुनि-धुनि कऽ, ज्ञानपूर्वक से करताह, ओ सभ ताही क्षण सँ धर्मकेँ अपूर्व ओ सही तरीकासँ बूझऽ लगताह ।

बाल, वृद्ध आ विकलांग जँ श्रम नहि करथि तँ केओ तकरा अपवाद नहि बूझथि । नेना अपन मायमे समटा जाइत अछि । जँ प्रकृतिक नियम भंग नहि कयल जाय, तँ बूढ़ो सभ विकलांग नहि बनताह आ हुनका रोग तँ भला होयबे किएक करतनि ?

●

सर्वधर्म-समभाव-1

ता. 23.09.30
मंगल-प्रभात

हमरालोकनिक व्रत सभमे जे व्रत सहिष्णुता अर्थात् सहनशीलता नामे जानल जाइत छल, ओकरे ई नव नाम देल गेलैक अछि । सहिष्णुता शब्द अँग्रेजी शब्द **'टॉलरेशन'**क शब्दान्तर थिक । ई हमरा पसिन्न नहि छल मुदा दोसर नाम फुराइते ने छल। काका साहिबकेँ सेहो ई पसिन्न नहि छलनि। ओ **सर्वधर्म समादर** शब्द सुझौलनि । हमरा सेहो पसिन्न नहि पड़ल। दोसर धर्मकेँ सहन करबामे ओकरा सभक (धर्मक) लघुताक भान होइत अछि। अहिंसा हमरालोकनिकेँ आन धर्मक लेल समभाव, बरोबरिक भाव सिखबैत अछि । आदर आ सहनशीलता अहिंसाक दृष्टिञे बेस नहि अछि । दोसर धर्मक हेतु समभाव रखबाक मूलमे अपन धर्मक अपूर्णताक स्वीकृति आबिये जाइत छैक । आ सत्यक आराधना, अहिंसाक कसौटी सैह सिखबितो अछि। सम्पूर्ण सत्यकेँ जँ हम देखने रहितहुँ तखन सत्यक आग्रहे किएक रहैत ? तखन तँ हमरालोकनि परमेश्वरे भऽ जइतहुँ, किएक तँ सत्ये परमेश्वर थिकाह से हमरालोकनिक भावनामे अछि । हमरालोकनि सम्पूर्ण सत्यकेँ चीन्हैत नहि छी, तेँ ओकर आग्रह रखैत छी आ तेँ प्रयासक हेतु स्थान छैक। एहिमे हमरालोकनिक अपूर्णताक स्वीकृति आबि जाइत अछि। जँ हमरालोकनि अपूर्ण छी तँ हमरालोकनिक कल्पनाक धर्मो अपूर्ण अछि । स्वतंत्र धर्म सम्पूर्ण होइत अछि । ओकरा हमरालोकनि देखलियैक अछि नहि, जेना हमरालोकनि ईश्वरक साक्षात्कार नहि कयल अछि । हमरालोकनिक मान्य धर्म अपूर्ण अछि आ ओहिमे सदिखन अदला-बदली होइत रहैत छैक, होइत रहतैक । जँ एना होइक तखने हमरालोकनि ऊपर आ बेसीसँ बेसी ऊपर उठि सकैत छी, सत्यक दिस, ईश्वरक दिस आगू बढ़ि सकैत छी । आ जँ मनुष्यक द्वारा गृहीत सभटा धर्मकेँ हम सभ अपूर्णे मानि ली, तँ फेर ककरो ऊँच अथवा नीच मानबाक गप्पे नहि रहि जाइत छैक । सभटा धर्म सत्ये थिक, मुदा सभ अपूर्ण अछि, तेँ ओहि सभमे दोष भऽ सकैत छैक।

समभाव रहलो पर हमरालोकनि ओहि सभमे (सभटा धर्ममे) दोष देखि सकैत छी । हमरालोकनि अपनो धर्ममे दोषकेँ देखी । एहि प्रकारक दोष सभक कारणे ओकरा (अपना धर्मकेँ) हमरालोकनि त्यागि नहि दी अपितु ओहि दोष सभकेँ मेटाबी । जँ हमरालोकनि एहि प्रकृतिक समभाव राखी तँ दोसर धर्म सभसँ जे किछु ग्रहण करबा योग्य होयत, तकरा सभकेँ अपन धर्ममे स्थान दिअयबामे कोनो संकोच नहि होयत, ततबे नहि, अपितु सैह करब हमरालोकनिक कर्त्तव्य भऽ जायत।

सभटा धर्म ईश्वरक देन थिकनि, मुदा ओ सभ मनुष्यक कल्पनाक धर्म थिक । आ जँ लऽ कऽ मनुष्य ओकरा सभक प्रचार-प्रसार करैत अछि, तँ ओ सभ अपूर्ण अछि । ईश्वरक बनाओल धर्म पहुँचसँ दूर-अगम्य अछि। मनुष्य ओकरा (अपना) भाषामे उपस्थापित करैत अछि, ओकर अर्थो मनुष्ये करैत अछि। ककर अर्थ सटीक छैक ? सभ केओ अपन-अपन दृष्टिजे, जाधरि ओहि दृष्टिक अनुरूप चलैत छथि, ताधरि सत्य छथि । मुदा सभक ठीक नहि होयब सेहो असम्भव नहि । तँ हमरालोकनिकेँ समस्त धर्मक प्रति समभाव रखबाक चाही । एहिसँ हमरालोकनिकेँ अपन धर्मक प्रति निरपेक्षता नहि अबैत अछि, मुदा अपन धर्मक प्रति हमरालोकनिक जे श्रद्धा अछि, से अन्धभक्ति नहि भऽ कऽ ज्ञानमय बनि जाइत अछि, आ तँ लऽ कऽ बेस सात्विक, बेस अमल-निर्मल बनि जाइत अछि । सभटा धर्मक प्रति जँ समभाव भऽ जाय तखने हमरालोकनिक दिव्य चक्षु खुजि सकैत अछि । कट्टरतावादी धर्मान्धता ओ दिव्य दर्शनमे उत्तर- दक्षिणक अन्तर होइत छैक। धर्मक ज्ञान भेला पर बाधा पड़ा जाइत छैक आ समभाव उत्पन्न भऽ जाइत छैक। मनमे एहि समभावकेँ बढ़ाकऽ हमरालोकनि अपन धर्मकेँ नीक जकाँ चीन्हि सकैत छी ।

एहि ठाम धर्म-अधर्मक भेदक विलोपन नहि होइत छैक । एहिठाम तँ जाहि-जाहि धर्म सभक लोकमान्यता हमरालोकनि जनैत छी, तकरे गप्प कऽ रहल छी । एहि समस्त धर्म सभमे मूल सिद्धान्त -आधारभूत संरचना तँ एके छैक । एहि प्रकारक समस्त धर्ममे संत स्त्रीपुरुषलोकनि भऽ गेलाह

अछि, आइयो वर्तमान छथि । तँ धर्म सभक हेतु समभावमे आ धर्मी मनुष्य लोकनिक हेतु समभावमे कनेक अन्तर छैक । समस्त मानव जगतक हेतु-दुर्जन आ सुजनक हेतु, धर्माचारी ओ अधर्माश्रित लोकनिक हेतु समभावक आवश्यकता छनि, मुदा कखनो अधर्मक हेतु नहि ।

तखन ई प्रश्न उठैत अछि जे अनेकानेक पन्थ किएक ? पन्थ बहुतोक अछि, से हमरालोकनि जनैत छी । आत्मा एकमात्र अछि मुदा मनुष्यक देह अनगिनती अछि । मानव देहक ई गणनाविहीनता टारनहुँ नहि टरि सकैछ । तथापि आत्माक एकताकेँ हमरालोकनि चीन्हि सकैत छी । धर्मक उद्गम एकटा अछि, जेना गाछ एक गोट होइत अछि आ पात अनगिनती।

●

सर्वधर्म-समभाव-2

ता. 30.09.30
मंगल-प्रभात

ई विषय ततेक महत्त्वपूर्ण अछि जे हम एकरा कनेक आर विस्तार करऽ चाहैत छी । जँ हम अपन अनुभवक वर्णन करी तँ समभावक अर्थ संभवतः बेस स्पष्ट भऽ सकत । जेना एहि ठाम प्रतिदिन प्रार्थना होइत अछि, तहिना **फिनिक्सो**मे नित्य प्रार्थना होइत छल । प्रार्थना कएनिहार हिन्दू, मुसलमान आ इसाइ छलाह । एक **रुस्तमजी सेठ** आ हुनक नेना सभ अनेक बेर ओहिमे सम्मिलित होइत छलाह । रुस्तम सेठजी के **'श्रीराम जय राम जय जय राम'** भजन बहुत पसिन्न छलनि ।

जतऽ धरि हमरा मोन पड़ैत अछि, एक बेर मगनलाल (गाँधी) अथवा काशी (बहिन) हमरा सभकेँ वैह भजन गबा रहल छलीह। रुस्तमजी सेठ बीचेमे हर्षपूर्वक चिकरि उठलाह । 'श्रीरामजीक बदला **दादा होरमज्द** गबैत ने जाउ । आगू- आगू गओनिहार आ पाछू-पाछू पुरनिहार लोकनि ई विचार अत्यन्त सहज भावसँ ग्रहण कऽ लेलनि आ तखनसँ जहिया कहियो रुस्तमजी सेठ हाजिर होथि तहिया बिनु चुकने आ ओ नहिञो रहैत छलथिन तैओ कहिओ-कहिओ हमरालोकनि ओ भजन दादा होरमज्दक नाम लऽ कऽ गबैत छलहुँ । स्व. दाउद सेठक बेटा स्व. हुसैन तँ आश्रममे बहुतो बेर अबैत रहैत छलाह । ओ उत्साहपूर्वक प्रार्थनामे शामिल होथि । ओ स्वयं अत्यन्त मधुर स्वरमे 'आर्गन' लऽ कऽ **ये बहारे बाग दुनिञा चन्द रोज'** गबैत छलाह। ओ हमरो सभकेँ ई भजन सिखा देने छलाह तथा प्रार्थनामे अनेक बेर एकरा गाओल जाइत छलैक । हमरालोकनिक ओहिठामक प्रार्थना-मालामे ओहि गीतकेँ जे स्थान भेटल छैक, से सत्यप्रिय हुसेनक स्मृतियेमे भेटल छैक। ओकरासँ अधिक उत्साहपूर्वक सत्यक पालन कएनिहार नवयुवक हम नहि देखने छी । **जॉसेफ रॉयफेन** आश्रममे अनेक बेर अबैत-जाइत रहैत छलाह। ओ इसाइ छलाह । हुनका **'वैष्णव जन'** भजन खूब पसिन्न छलनि। ओ नीक संगीतज्ञ छलाह । ओ 'वैष्णवजन'क स्थान पर एक दिन **'क्रिश्चियन जन तो तेने कहिये'**क अलाप शुरू कऽ देलनि। सभ केओ ओही गीतकेँ

गाबऽ लागल । जोसेफक हर्षक ओर नहि रहलनि ।

अपन संतोषक लेल जखन हम अलग-अलग धर्मक पोथी पढ़ि रहल छलहुँ तखन इसाइधर्म, इस्लाम, जरथुस्ती, यहूदी आ हिन्दू- एतेक धर्मक पोथीक ज्ञान हम अपन संतोषक लेल प्राप्त कयल । ई करैत काल एहि समस्त धर्मक प्रति हमर मनमे समभाव छल से हम कहि सकैत छी । ओहि समयमे हमरा ई ज्ञान छल, से हम नहि कहि सकैत छी । 'समभाव' शब्दोक पूर्ण ज्ञान ताहि समय हमरा नहि छल होयत । मुदा ओहि समयक अपन स्मरणकेँ जँ टटका करैत छी, तँ हमरा एहि धर्म सभक चुटकी लेबाक इच्छा कहियो भेल हो से मन नहि पड़ैत अछि । प्रत्युत् हुनकोलोकनिक धर्मग्रन्थकेँ धर्मक पोथी मानि हम बेस सम्मानक संग पढ़ैत छलहुँ आ सभमे मूल नीतिक सिद्धान्त एके रंग बुझना जाइत छल। किछु बात हमरा माथमे नहि अँटैत छल ।

एहने सन स्थिति हिन्दू धर्मग्रन्थक संग छल । एहन तँ कतोक बात अछि जे आइयो हमरा बोधमे नहि अबैत अछि । मुदा अनुभवसँ हम देखैत छी जे जकरा हम बूझि नहि पाबी, से गलतीए थिक, से मानि लेबाक हड़बड़ी करब दोष थिक । जे किछु पहिने हमरा बूझऽमे नहि अबैत छल, से आइ दीप जकाँ स्पष्ट बुझना जाइत अछि । अपन अन्तःकरणमे समभाव बढ़ौलासँ बहुतो गेँठ अपने फुजि जाइत छैक आ जाहि ठाम हमरालोकनिकेँ दोषेटा देखि पड़य ताहि ठाम ओकरा देखयबोमे जे नम्रता ओ विनय हमरालोकनिमे रहैत अछि, ताहि कारणे किनको कष्ट नहि भऽ पबैत छनि ।

एकटा द्वन्द्व प्रायः रहिये जाइत अछि । पहिने हम कहल जे धर्म-अधर्मक बीच अन्तर रहैत छैक आ एहिठाम अधर्मक प्रति समभाव रखबाक उद्देश्य नहि अछि । जँ से हो तँ की धर्म-अधर्मक निर्णय करिते काल समभावक कड़ाम टूटि नहि जाइत अछि ? ई सवाल उठत, आ एहि प्रकारक (धर्म-अधर्मक) निर्णय कयनिहार गलती करय सेहो सम्भव अछि।

मुदा जँ हमरामे वास्तविक अहिंसा-व्रत रहत, तँ हम बैर भावसँ बचि जाइत छी किएक तँ अधर्मकेँ देखितो अधर्मक आचरण कयनिहार, ग्रहण

कयनिहारक हेतु तँ हमरा मनमे स्नेहेक भाव होयत । आ तँ की तऽ ओहो हमरे दृष्टिकेँ अपनाओत अथवा हमर गलतीसँ हमर परिचय कराओत अथवा हम दुनू एक दोसराक मतभेदकेँ सहैत रहब। अन्तमे, आगूवला व्यक्ति जँ अहिंसक नहि रहत तँ ओ क्रूरता करत, मुदा जँ हम अहिंसाक वास्तविक पुजारी रहब तँ हमर विनय ओकर क्रूरताकेँ दूर करबे करतैक, ताहिमे शंका नहि । दोसराक गलतीक लेल हमरालोकनिकेँ ओकरा दुःख नहि देबाक अछि, स्वयं दुःख सहबाक अछि-एहि दपदप नियमक जे पालन करैत अछि, से सभ प्रकारक संकटसँ उबरि जाइत अछि ।

नम्रता

ता. 07.10.30

मंगल-प्रभात

व्रत सभमे एकर ने पृथक् स्थान छैके आ ने भइये सकैत छैक। ई अहिंसेक एक गोट अर्थ थिक अथवा एना कहल जाय ने अहिंसाक अन्तर्गत नम्रतो आबि जाइत छैक । मुदा नम्रता प्रयासपूर्वक अनने नहि अबैत छैक। ई तँ स्वभावहिमे आबि जयबाक चाही । जखन पहिले-पहिल आश्रमक नियमावली बनाओल गेल, तखन ओकर प्रारूप मित्रलोकनिकेँ पठाओल गेल छलनि । सर गुरुदास बनर्जी नम्रताकेँ व्रत मध्य स्थान देबाक सूचना देने छलाह आ ताहू समय हम एकरा व्रत मध्य स्थान नहि देबाक वैह कारण जनौने छलियनि जे हम एहि ठाम लिखि रहल छी । मुदा ओकर व्रत मध्य स्थान नहि छैक, तैओ ओ व्रत सभसँ बेसी आवश्यक अछि, आवश्यक तँ अछिये । मुदा केओ नम्रता अभ्यासपूर्वक प्राप्त कयने होथि, से बुझबामे नहि आयल अछि । सत्यक आदति लगाओल जा सकैत छैक, दयाक आदति लगाओल जा सकैत छैक, मुदा नम्रताक आदति लगौनाइ दंभक आदति लगयबा जकाँ कहल जा सकैत अछि । एहि ठाम नम्रता ओ वस्तु नहि थिक जे पैघ लोक सभमे एक-दोसराक प्रति सम्मान-प्रदर्शन हेतु सिखाओल जाइत अछि, अथवा जकर शिक्षा देल जाइत छैक । केओ ककरो दंड प्रणाम करैत होइक मुदा मनमे ओकरा प्रति घृणाक भाव भरल रहैक, तँ से नम्रता नहि भेलैक, चतुरता भेलैक । केओ राम नाम रटैत रहय, माला फेरैत रहय, मुनि सन बनि कऽ समाजक बीच बैसल करय, मुदा ओकर अन्तःकरणमे जँ स्वार्थ भरल रहैक तँ ओ नम्र नहि प्रत्युत खेलार अछि । नम्र मनुष्य स्वयं नहि जनैत अछि जे ओ कखन नम्र भऽ जाइत अछि । सत्य इत्यादिक नाप हमरालोकनि अपन लग राखि सकैत छी, मुदा नम्रताक कोनो नाप नहि होइत छैक । प्राकृतिक नम्रता नुकायल नहि रहैत छैक । तथापि नम्र मनुष्य स्वयं ओकरा देखि नहि सकैछ । वशिष्ठ आ विश्वामित्रक उदाहरण तँ हम आश्रममे अनेक बेर जानि चुकल छी । हमरालोकनिक नम्रता शून्यताक सीमा

धरि चलि जयबाक चाही । हमहूँ किछु छी, से भूत जखने मनमे प्रवेश कयलक कि नम्रता हेरा गेल आ हमर सभटा कयल-धयल व्रत सभ माटिमे मिलि गेल। व्रती जँ मनमे व्रत-पालनक अभिमान राखय, तँ व्रतक मूल्य हेरा दिअय आ समाजमे विष सदृश भऽ जाय। ओकर व्रतक मूल्य ने समाजे देतैक, आ ने ओ स्वयं ओकर फलभागी भऽ सकत । नम्रताक अर्थ अछि 'अहम्' भावक पूर्णतः क्षय अर्थात् नष्ट भऽ जायब । चिन्तन कयला उत्तर पता लागि जाइत छैक जे एहि जगतमे समस्त जीव बालुक एक गोट टुकड़ी-खण्डोक बरोबरि नहि अछि । शरीरक रूपमे हमरालोकनि क्षणभंगुर छी । कालक अनन्त चक्रमे सौ सालक प्रमाण बहार कयले नहि जा सकैछ। मुदा हम जँ ओहि चक्करसँ बहार भऽ जाइ अर्थात् 'शून्य' बनि जाइ तँ सभ किछु बनि जाइ । किछु होयब अर्थात ईश्वरसँ-परमात्मासँ सत्यसँ पृथक् भऽ जायब । किछुओक मेटा जायब माने परमात्मामे एकाकार भऽ जायब। समुद्रमे समाहित बून समुद्रक महत्ताक उपयोग करैत अछि मुदा तकर ओकरा ज्ञान नहि रहैत छैक । जखने ओ समुद्रसँ अलग होइत अछि आ निजत्वक दावा करैत अछि आ कि ओही क्षण सुखा जाइत अछि । एहि जीवनक उपमा जे पानिक बुलबुल्लासँ कयल गेल अछि, ओहिमे कनेको अतिशयोक्ति नहि देखि पड़ैछ। एहन नम्रता-शून्यता आदति लगौलासँ कोना आबि सकैत छैक? मुदा व्रत सभकेँ नीक जकाँ बुझि गेला उत्तर नम्रता स्वयमेव आबऽ लगैत छैक । सत्यक पालन करबाक इच्छा रखनिहार मनुष्य अहंकारी भइये कोना सकैत अछि? दोसराक हेतु प्राणत्याग कयनिहार मनुष्य अपना लेल जगह बनयबा लय कतऽ जायत ? ओ तँ जखने प्राणत्याग कऽ देबाक निश्चय कयलक तखने अपन देहकेँ फेकि देने छल ।

एहन नम्रताक अर्थ पुरुषार्थक अभाव तँ नहि थिक ? एहन अर्थ हिन्दू धर्ममे कइये देल गेल छैक । आ तँ कोढ़िपना आ पाखंडकेँ अनेक ठाम जगह भेटि गेल छैक । वास्तवमे नम्रताक अर्थ थिक तीव्रतम पुरुषार्थ, कठिनसँ कठिन परिश्रम । मुदा से सभटा परमार्थक लेल होयबाक चाही । ईश्वर स्वयं चौबीसो घंटा एक सासक संग क्रियाशील रहैत छथि, अँगैठी

पर्यन्त लेबाकं अवकाश नहि लैत छथि । हम हुनक भऽ जाइ, हुनका मे मिलि जाइ तँ हमर उद्यम हुनके जकाँ जाग्रत भऽ जायत-भऽ जयबाक चाही। समुद्रसँ अलग भेल बुन्दक लेल हमरालोकनि आरामक कल्पना कऽ सकैत छी । मुदा समुद्रमे रहऽबला बुन्दकेँ आराम कोना भेटि सकैत छैक ? समुद्रकेँ एको क्षणक-एको पलक आराम कतऽ छैक ? तहिना हमरालोकनिक अछि। ईश्वररूपी समुद्रमे हम समाहित भेलहुँ आ कि हमर आराम गेल, आरामक आवश्यकतो गेल । वैह वास्तविक आराम थिक, ओही महा-अशांतियोमे शान्ति छैक । तँ वास्तविक नम्रता हमरासँ समस्त जीवक सेवा हेतु सभ किछु परित्याग कऽ देबाक अपेक्षा रखैत अछि । सभ किछु समाप्त भऽ गेलाक बाद हमरालोकनिक लग ने रवि रहि पबैत अछि ने शुक्रे, ने सोमे। एहि दशाक वर्णन करब कठिन अछि मुदा एकरा अनुभवसँ जानल जा सकैत छैक। जे सभ कथूक परित्याग कऽ देने छथि, से एकर अनुभव कयने छथि। हम सभ गोटे एकर अनुभव कऽ सकैत छी। एकर अनुभव करबाक इच्छेसँ हमरालोकनि आश्रममे एकत्र भेल छी । सभटा व्रत, सभटा काज-तिहार एही दशाक अनुभव करबाक हेतु अछि । ई की ओ, किछु-किछु करैत-करैत ओ दशा कोनो दिन हमरालोकनिकेँ हाथ लागिये जायत । केवल ओकरा तकबाक हेतु गेलासँ ओ भेटनिहार नहि ।

●

स्वदेशी

प्रवचन सभमे '**स्वदेशी**' पर (जहलसँ) लिखब हम रहैये देब; (किएक तँ) राजनीतिसँ सम्बन्धित विषयकेँ खोरचाल नहि करबाक हमर जे संकल्प अछि, ताहिमे एना कयने किछु लघिमा आबि जायत । स्वदेशीक सम्बन्धमे केवल धार्मिक दृष्टिसँ लिखलो पर किछु तेहन सन लिखऽ पड़त, जकर राजनीतिक संग परोक्ष (दूरवर्ती) सम्बन्ध छैके ।

●

स्वदेशी व्रत

स्वदेशी व्रत एहि युगक एक गोट महाव्रत थिक । जे वस्तु आत्माक धर्म थिकैक, मुदा अज्ञान अथवा आनो आन कारणे आत्माकेँ जकर सुधि नहि रहलैक, तकर पालन हेतु व्रत धारण करबाक आवश्यकता होइत छैक। जे स्वभावहिसँ मांस नहि खायवला अछि, तकरा मांस नहि खयबाक व्रत नहि लेबऽ पड़ैत छैक । मांस ओकरा लेल लिलसाक वस्तु नहि छैक, ततबे नहि, मांसकेँ देखैत देरी ओकरा उल्टी भऽ जयतैक ।

स्वदेशी आत्माक धर्म थिक मुदा से बिसरा गेल अछि । तेँ एकरा सम्बन्धमे व्रत लेबाक आवश्यकता छैक । आत्माक हेतु स्वदेशीक अन्तिम अर्थ छैक-समस्त स्थूल अर्थात् सांसारिक सम्बन्धसँ छुट्टी । देहो ओकरा लेल परदेशी छैक, किएक तँ दोसर आत्माक संग एकीकरण होयबामे ओ रोकैत छैक, ओकर मार्गक रोड़ा बनैत छैक । समस्त जीवक संग एकत्व बनबैत स्वदेशी धर्मकेँ जननिहार आ पालन कयनिहार व्यक्ति देहोकेँ छोड़ि देत । जँ ई अर्थ ठीक छैक तँ हमरालोकनि सहजे बूझि जायब जे अपन लग-पासक लोकक सेवामे लागल रहब, ओतप्रोत भऽ जायब, सैह स्वेदशी धर्म थिक । एहन सेवा पयबासँ दूरक लोक वञ्चित रहि जाइत छथि अथवा हुनकालोकनिकेँ हानि पहुँचैत छनि, एहन आभास होयब सम्भव अछि । मुदा से केवल आभासेटा होयत । स्वदेशीक शुद्ध सेवा करैत परदेशीयोक शुद्ध सेवा होइते छनि । जेना पिण्डमे तहिना ब्रह्माण्डमे ।

एकर विपरीत, दूरक लोकक सेवा करबाक मोह रखला उत्तर ओ तँ भऽ नहि पबैत छैक आ पड़ोसीलोकनिक सेवा सेहो पड़ले रहि जाइत छैक। एहि तरहेँ लोकक दुनू-एम्हरुका आ ओम्हरुका दुनू-नष्ट भऽ जाइत छनि । हमरालोकनि पर आश रखनिहार कुटुम्ब अथवा ग्रामीण लोकनिकेँ जँ छोड़ि देल जाय, तँ हमरालोकनिपर हुनका सभक जे आश रहैत छनि, से टूटि जाइत छनि । दूरक लोकक सेवा कयलासँ जनिकालोकनिक धर्म हुनकालोकनिक

सेवा करब रहैत छनि, से सभ अपन धर्मकेँ बिसरि जाइत छथि । संभव अछि जे ओलोकनि दूरक लोककेँ मिथ्या दुलार करैत होथि; एना कऽ कऽ ओ सभ ओहिठामक परिवेशकेँ बिगाड़ैत छथि आ अपना ओहिठामक परिवेशकेँ तँ एहन लोक बिगाड़िए कऽ गेल रहैत छथि। एहि तरहेँ सब प्रकार सँ एहन लोक अधलाहे करैत छथि । एहन अनगिनती उदाहरणकेँ ध्यानमे राखि स्वदेशी-धर्मकेँ साबित कयल जा सकैत अछि । तेँ **'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः** (अपन धर्मक पालन करैत मृत्युओ आबि जाय तँ नीक, मुदा दोसराक धर्म खतरनाक होइत अछि ।) वचन कहल गेल अछि । एकर अर्थ एहि तरहेँ अवश्ये कयल जा सकैछ: 'स्वदेशीक पालन करैत मृत्युओ भऽ जाय तइयो नीके अछि, मुदा परदेशी तँ खतरनाके छैक ।' स्वधर्म अर्थात् स्वदेशी ।

स्वदेशीकेँ नहि बुझलेसँ गड़बड़ होइत छैक । कुटुम्ब पर मोह राखि हमरालोकनि हुनका सभकेँ मिथ्या दुलार देखबैत रहियनि, हुनका लेल धनक चोरी करैत रही, आन कतोक कुटिचालि चलैत रही, से स्वदेशी नहि थिक। हमरालोकनिकेँ हुनकालोकनिक प्रति अपन धर्मक पालन करबाक अछि । ओहि धर्मक अन्वेषण कऽ आ ओकर पालन करैत हमरालोकनिकेँ सर्वव्यापी, सर्वत्र पसरल धर्म भेटि जायत । अपन धर्मक पालनसँ दोसर धर्मवलाक अथवा दोसर धर्मकेँ हानि होइते नहि छैक आ ने होयबाके चाही। जँ से होइत छैक तँ हमरालोकनि द्वारा मानल गेल धर्म स्वधर्म नहि अपितु अभिमान थिक आ तेँ ओ त्याग करबाक योग्य थिक ।

स्वदेशीक पालन करैत कुटुम्बक परित्यागो करऽ पड़ैत छैक। मुदा जँ से करहो पड़य तँ ताहूमे कुटुम्बक सेवा होयबाक चाही । जेना अपनाकेँ हतिओ कऽ हमरालोकनि अपन रक्षा कऽ सकैत छी, तहिना भऽ सकैछ जे कुटुम्बक परित्याग कऽ कऽ हमरालोकनिक कुटुम्बक रक्षे करैत होइ । मानि लिअऽ जे हमरा गाममे टुनकी पसरि गेल अछि । ओहि बिमारीमे ग्रस्त लोकक सेवामे हम अपनाकेँ, अपन पत्नीकेँ आ पुत्रीकेँ जँ लगा दिअनि आ ओहि बिमारीसँ ग्रस्त भऽ कऽ सभ केओ मृत्युक वरण कऽ लेथि, तँ हम

कुटुम्बक नाश नहि कयल, हम हुनकालोकनिक सेवे कयल अछि । स्वदेशीमे कोनो स्वार्थ नहि छैक आ जँ छैको तँ निर्मल स्वार्थ छैक । निर्मल स्वार्थ अर्थात् परमार्थ, शुद्ध स्वदेशी माने परमार्थक अन्तिम छोर ।

एहि विचारधाराक आधार पर हम खादीमे शुद्ध सामाजिक स्वदेशी धर्मकेँ देखल अछि । सभ केओ बुझि सकथि, एहन एहि युगमे, एहि देशमे सभक योगक्षेमक अत्यन्त आवश्यकता होइ, से कोन स्वदेशीधर्म भऽ सकैत छैक ? जकर सहज पालन मात्रसँ हिन्दुस्तानक करोड़क करोड़ लोकक रक्षा भऽ सकैत छनि, एहन कोन स्वदेशी धर्म अछि ? उत्तर भेटल-चरखा अथवा खादी ।

एहि धर्मक पालनसँ परदेशी मिलवला सभकेँ हानि होयतनि, से केओ जुनि बुझथु । जँ चोरकेँ चोरी कयल वस्तु घुरबऽ पड़ैक अथवा चोरी करबासँ रोकल जाइक, तँ ओहिसँ ओकरा हानि नहि छैक, अपितु लाभे छैक। जँ पड़ोसी शराब पीब अथवा अफीम खायब छोड़ि देथि, तँ ओहिसँ कलवारकेँ अथवा अफीमक दोकानदारकेँ हानि नहि, लाभे छैक। अनीतिपूर्ण तरीकासँ जे केओ धनक उगाही करथि, हुनक ओहि अनर्थक जँ नाश भऽ जाइनि तँ ताहिसँ हुनको आ जगतोकेँ लाभे छैक ।

मुदा जेलोकनि चरखासँ जेना-तेना सूत काटि आ खादी पहिरि-पहिरा कऽ ई मानि लैत छथि जे स्वदेशी-धर्मक पूर्णतः पालन भऽ गेल से सभ मोहमे निमग्न छथि । खादी सामाजिक स्वदेशीक प्रथम सोपान थिक, ओ स्वदेशी धर्मक अन्तिम छोर नहि थिक । एहन खद्दरधारीलोकनि देखल गेलाह अछि जे आन सभटा वस्तु परदेशी कीनैत छथि । ओ सभ स्वदेशी धर्मक पालन नहि करैत छथि । ओ सभ तँ खाली समसामयिक धारामे बहि रहल छथि । स्वदेशी धर्मक पालन कयनिहार सदिखन अपन लगपासक निरीक्षण करत आ जतऽ-जतऽ पड़ोसीक सेवा कयल जा सकत, अर्थात् जतऽ कतहु हुनकालोकनिक हाथक तैयार कयल आवश्यकताक माल रहत, तकरा दोसर माल छोड़ि कऽ कीनत भने स्वदेशी वस्तु आरम्भमे महग आ घटिया प्रकृतिक किएक ने हो । व्रत धारण कयनिहार ओकरा सुधारबाक प्रयत्न करत, स्वदेशी

वस्तु अधलाह अछि, तँ कादर बनि परदेशीक उपयोग नहि करऽ लागत।

मुदा स्वदेशी-धर्मकेँ जननिहार अपने कूपमे डूबि नहि मरत । जे वस्तु स्वदेशमे नहि बनैछ अथवा बड़ कष्टसँ बनि सकैत छैक, तकरा परदेशक द्वेषक कारणे ओ अपने देशमे बनयबामे लागि जाय, तँ से स्वदेशी-धर्म नहि भेल । स्वदेशी धर्मक पालन करयवला परदेशीक द्वेष कहियो ने करत । तँ पूर्ण स्वदेशीमे ककरो प्रति द्वेष नहि छैक । ओ संकुचित धर्म नहि थिक। ओ प्रेमसँ, अहिंसासँ बहार भेल सुन्दर धर्म थिक।

व्रतक आवश्यकता

ता. 14.10.30
मंगल-प्रभात

व्रतक महत्त्वक सम्बन्धमे हम एहि निबन्धमालामे जतऽ-ततऽ विकीर्ण रूपमे लिखने होयब । मुदा जीवनकेँ व्यवस्थित करबाक हेतु व्रत कतेक आवश्यक अछि, ताहिपर विमर्श करब एतऽ उचित बुझना जाइछ । व्रतक सम्बन्धमे हम लिखि चुकल छी, तेँ आब ओकर आवश्यकतापर विचार करी।

एकटा एहन सम्प्रदाय अछि आ ओ समृद्धो अछि, ओ कहैत अछि: 'फल्लां नियमक पालन करब नीक छैक मुदा ओकरा सम्बन्धमे व्रत लेबाक आवश्यकता नहि छैक । ततबे नहि, ओ मनक दुर्बलताकेँ उजागर करैत छैक आ हानिकर सेहो भऽ सकैत छैक। आ, व्रत लेलाक बाद एहन नियम बाधा स्वरूप लागय अथवा पापस्वरूप बुझना जाय, तैओ ओहिसँ सटल रहऽ पड़य, से तँ सहन नहि भऽ सकैछ ।' ओ कहैत अछि : 'उदाहरणक हेतु शराब नहि पीब नीक छैक, तेँ शराब नहि पीबाक चाही । मुदा जँ कखनो पीबिये लेल जाय तँ की भऽ जयतैक ? दवाइक रूपमे तँ ओकरा पीबाक चाही । तेँ ओकरा नहि पीबाक व्रत लेब तँ गरदनिमे फँसरी लगयबाक बरोबरि अछि । आ जेना शराबक सम्बन्धमे अछि, तहिना आनो वस्तुक सम्बन्धमे अछि । भने हमरालोकनि झूठे किएक ने बाजी ?' हमरा एहि वितर्क सभक कोनो आधार नहि बुझना जाइत अछि । व्रतक अर्थे अछि अटल निश्चय । बाधा सभकेँ पारे करबाक हेतु तँ व्रतक आवश्यकता छैक। बाधाकेँ बर्दास्त करितो जे टूटय नहि, सैह अटल निश्चय मानल जायत । एहन निश्चयक बिना आदमी निरन्तर ऊर्ध्वगामी नहि भऽ सकैछ, एकर गवाही समस्त संसारक अनुभवे दैत अछि । जे आचरण पापस्वरूप होमय, तकर निश्चयकेँ व्रत नहि कहल जा सकैछ । ओ तँ राक्षसी-शैतानी प्रवृत्ति थिक। आ जे निश्चय पूर्वमे पुण्यस्वरूप बुझना गेल हो आ बादमे पापस्वरूप साबित होमय, ओकर त्याग करबाक धर्म आवश्यक भऽ जाइत छैक । मुदा एहन वस्तुक सम्बन्धमे केओ व्रत नहि लैत अछि आ ने लेबाक चाही । सभ केओ जकरा धर्म बूझैत छथि

मुदा जकर आचरण करबाक हमरालोकनिकेँ आदति नहि पड़ल अछि, तकरे लेल व्रत लेल जयबाक चाही । उपरका उदाहरणमे तँ पापक केवल आभासेटा भऽ सकैत अछि । 'सत्य बजने जँ ककरो हानि होइक तँ ?' एहन चिन्तन करबाक हेतु सत्यवादीलोकनि नहि बैसताह। सत्यसँ एहि संसारमे ककरो हानि नहि होइत छैक, ने भइये सकैत छैक, एहन विश्वास राखल जयबाक चाही । तहिना शराब पीबाक सम्बन्धमे । की तँ ओहि व्रतमे दवाइक रूपमे शराब लेबाक छूट रखबाक चाही अथवा जँ छूट नहि राखल गेल हो तँ व्रत लेलाक बाद देहपर खतरा उठयबाक निश्चय होयबाक चाही। दवाइक रूपमे शराब नहि पीने जँ देह छुटियो जाय तँ की भऽ गेल ? शराब पीने देह रहबे करत, तकर हुण्डी के लिखबा सकैत अछि । आ, ओहि क्षणमे देह रहि गेल मुदा दोसरे क्षण कोनो दोसर कारणसँ छुटियो जाय तँ तकर उत्तरदायित्व ककरा माथ पर होयतैक ? तकर विपरीत, देह बरु छूटि जाय, तैओ शराब नहि पीबाक उदाहरण शराबक व्यसनमे फँसल लोक सभपर चमत्कारपूर्ण असरि करतैक, ई संसारक कतेक पैघ उपकार छैक ? 'देह छूटि जाय वा रहय, हमरा तँ अपन धर्मक पालन करबाके अछि' एहन भव्य आ शानदार निश्चय कयनिहार मनुष्ये कोनो कालमे ईश्वरक साक्षात् कऽ सकैत छथि । व्रत लेब कमजोरीक निशानी नहि छैक, प्रत्युत् शक्तिक निशानी छैक । फल्लां बात करब नीक अछि, तँ फेर ओकरा करबाके अछि, तकरे नाम अछि व्रत । ओहिमे शक्ति छैक। तखन ओकरा व्रत नहि कहि कऽ कोनो आने नामसँ जानी, तँ ओहिमे कोनो हर्ज नहि । मुदा 'जतऽ धरि भऽ सकत, करब' एहन कहऽवला अपन दुर्बलताक किंवा अभिमानक दर्शन करबैत अछि, भने ओ स्वयं ओकरा नम्रता बूझय । ओकरामे नम्रताक दरसो नहि छैक । 'जतऽ धरि भऽ सकत' एहन वाक्य शुभ निश्चयक हेतु विष समान अछि । ई हम अपन आ अनेक लोकक जीवनमे परखने छी । 'जतऽ धरि भऽ सकत ततऽ धरि' करबाक अर्थ भेल पहिले बाधा अयलापर खसि पड़ब । 'जतऽ धरि भऽ सकत ततऽ धरि सत्यक पालन करब' एहि वाक्यक कोनो अर्थे नहि छैक । व्यापारमे 'भऽ सकत तँ फल्लां तिथिकेँ

फल्लां रकम चुकयबाक' कोनो पत्रकेँ कतहु चेक अथवा हुंडीक रूपमे स्वीकृति नहि भेटि सकैछ । तहिना जतऽ धरि भऽ सकय ततऽ धरि सत्यक पालन करयवलाक हुंडी भगवानक दरबारमे भजाओल नहि जा सकैछ ।

भगवान स्वयं निश्चयक, व्रतक सम्पूर्ण विग्रह छथि । हुनक नियममे सँ एक गोट अणु, एक गोट परमाणु जँ कनेको घसकि जाय, तँ ओ भगवान रहिये नहि पओताह । सूर्य पैघ व्रतधारी छथि, तेँ संसारक काल गणना तैयार भऽ पबैत अछि आ शुद्ध पतड़ा बनाओल जा सकैत अछि । सूर्य एहन साख जमौने छथि जे ओ सभ दिन उगैत छथि आ सभ दिन उगिते रहताह आ तेँ हमरालोकनि अपनाकेँ सुरक्षित बुझैत छी । समस्त व्यापारक आधार एकेटा धूरी पर रहैत अछि। व्यापारीलोकनि एक दोसरासँ बान्हल नहि रहथि तँ व्यापार चलबे ने करत ।

ओना व्रत सर्वव्यापक, सभ ठाम पसरल देखि पड़ैत अछि। तखन फेर जतऽ अपन जीवनकेँ व्यवस्थित करबाक प्रश्न होमय, भगवानक दर्शन करबाक प्रश्न होमय, ओतऽ व्रतक बिना कोना चलि सकैत अछि? तेँ व्रतक आवश्यकताक सम्बन्धमे हमरालोकनिक हृदयमे कहिओ शक उत्पन्ने नहि होयबाक चाही ।

परिशिष्ट

(मंगल प्रभातक पाठकलोकनिक हेतु उपयोगी होयत, से मानि आश्रमक नियमावलीसँ निम्नलिखित भाग एतऽ उद्धृत कयल जा रहल अछि ।)

1. सत्य

सामान्य आचार-व्यवहारमे झूठक खेती ने वाणीसँ ने व्यवहारेसँ करबटा सत्यक अर्थ नहिं । मुदा सत्ये परमेश्वर थिकाह आ तदतिरिक्त आन किछु नहि अछि । ओहि सत्यक अन्वेषक आ पूजेक हेतु आन सभटा नियमक आवश्यकता छैक आ ओहीसँ ओ सभ उद्भूत अछि । एहि सत्यक उपासक ओ पुजेगरीलोकनि अपन कल्पनाक राष्ट्रक उत्थानोक हेतु ने झूठ बाजथि ने व्यवहार करथि । सत्यक हेतु ओलोकनि प्रह्लाद जकाँ माता-पिता आदि श्रेष्ठ जनक आदेशोकेँ शिष्टतापूर्वक प्रतिकार करबहिमे धर्म बूझथि ।

2. अहिंसा

जीवा-जन्तुकेँ जानसँ नहि मारबटा एहि व्रतक परिणति नहि थिक । अहिंसाक अर्थ थिक जन्तु-जनारोसँ लऽ कऽ मनुष्य धरिक समस्त जीवक हेतु समभाव-बराबरीक, अपनत्वक भाव । एहि व्रतकेँ पालन कयनिहारलोकनि घोर अन्यायी पर सेहो क्रोध नहि करथि, प्रत्युत ओकरो पर स्नेहभाव राखथि, ओकर कल्याण चाहथि आ ओकरा लेल नीक करथि । मुदा स्नेहक वशीभूत रहितो अन्यायीक अन्यायक वशमे नहि आबथि, ओकर अन्यायक विरोध करथि आ से सभ करबाक क्रममे जे कष्ट ओ दैक तकरा धैर्यक संग अन्यायीसँ बिनु द्वेष कयने सहन करथि ।

3. ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्यक पालनक अभावमे उपर्युक्त व्रत सभक पालन असंभव अछि । ब्रह्मचारी कोनो स्त्री अथवा पुरुष पर अधलाह दृष्टि नहि देथि सैह सीमा नहि थिक, अपितु मनहुसँ विषयक मन्थन किंवा भोग नहि करथि । आ जँ विवाहित होथि तँ अपन पत्नी किंवा पतिक संग विषय-भोग नहि करथि, मुदा हुनका मित्र बूझि हुनका संग निर्मल सम्बन्ध राखथि । अपन अथवा दोसराक स्त्री किंवा अपन पति अथवा दोसर पुरुषकेँ विकारपूर्वक स्पर्श करब अथवा ओकरा संग विकारपूर्ण गप-शप करब अथवा आन विकार

भरल चेष्टा करब सेहो स्थूल रूपेँ ब्रह्मचर्यकेँ भंग करब थिक । पुरुष-पुरुषक बीच अथवा स्त्री-स्त्रीक बीच अथवा दूनूकेँ कोनो वस्तुक सम्बन्ध मे विकारी चेष्टा करब सेहो स्थूल रूपेँ ब्रह्मचर्यकेँ भंग करब थिक ।

4. अस्वाद

मनुष्य जाधरि जीहक रसकेँ नहि जितैत अछि, ताधरि ब्रह्मचर्यक पालन बेस कठिन अछि, एहन अनुभव भेने अस्वादकेँ एकटा अलगे व्रत मानल गेल अछि । भोजन खाली शरीरक निर्वाहेक हेतु करबाक चाही, भोगक हेतु कथमपि नहि । तेँ ओकरा औषधि बूझि कऽ संयमसँ खयबाक आवश्यकता अछि । एहि व्रतक पालन कयनिहार विकार उत्पन्न करऽवला मसाला आदिक त्याग करथि । मांस खायब, शराब पीब, तमाकुल खायब, भांग पीब आदिक आश्रममे मनाही अछि । एहि व्रतमे स्वादक हेतु भोजक निमंत्रण किंवा भोजनक आग्रहक मनाही छैक ।

5. अस्तेय (अचौर्य)

दोसराक वस्तु ओकर स्वीकृत्यादेशक बिना नहि लेब, ततबे धरि एहि व्रतक हेतु सीमा नहि अछि । जे वस्तु जाहि काजक हेतु भेटल हो तकर ओहिसँ दोसर उपयोग करब किंवा जतबा अवधिक हेतु भेटल हो, ताहिसँ बेसी अवधि धरि काजमे आनब सेहो चोरीए थिक ।

एहि व्रतक जड़िमे सूक्ष्म सत्य तँ ई रहल अछि जे परमात्मा प्राणीक हेतु प्रतिदिनक आवश्यकताक वस्तु मात्र प्रतिदिन उत्पन्न करैत छथि आ ओकरा प्रदान करैत छथि । ओहिसँ कनेको अधिक उत्पन्ने नहि करैत छथि। तेँ मनुष्य अपन न्यूनतम आवश्यकतासँ अधिक जे किछु ग्रहण करैत अछि, से चोरी कऽ कऽ लैत अछि ।

6. अपरिग्रह (जमा नहि राखब)

अपरिग्रह अस्तेयक भीतरे आबि जाइत अछि । अनावश्यक वस्तु जहिना लेल नहि जा सकैछ तहिना ओकर संग्रहो नहि कयल जा सकैछ । तेँ जाहि खोराक अथवा वस्तु-जातक आवश्यकता नहि छैक, तकर संग्रह करब व्रत-भंग करब थिक । जकरा बिना कुरसीयोक बनि सकैत छैक, से कुरसी नहि राखय । अपरिग्रही मनुष्य अपन जीवनकेँ दिनानुदिन सरल करैत जाथि ।

7. श्रमव्ययी-आजीविका

अस्तेय आ अपरिग्रहक पालनक हेतु श्रमव्ययी-आजीविकाक नियम आवश्यक छैक । प्रत्येक मनुष्य अपन गुजर शारीरिक श्रमसँ कयल करथि तखने ओ समाज आ अपन द्रोहसँ बचि सकैत छथि । जनिक देह कारगर छनि आ जे सयान भऽ चुकल छथि, एहन स्त्री-पुरुषकेँ चाहियनि जे हाथसँ करबाक योग्य अपन सभटा दैनन्दिन काज ओ स्वयं कऽ लेल करथि आ अनेरे दोसराक चाकरी नहि लेथि । मुदा जखन नेना-भुटकालोकनिक, अपाहिजलोकनिक आ बूढ़ स्त्री-पुरुषलोकनिक सेवा करबाक अवसर भेटनि, तखन ओकरा सम्पन्न करब सामाजिक उत्तरदायित्व बूझऽवला प्रत्येक मनुष्यक धर्म थिक ।

एहि आदर्शकेँ आगू राखि आश्रममे जतऽ जऽन रखने बिना काज नहि चलि सकैछ, ततहि जऽन राखल जाइत छथि आ हुनकालोकनिक संग मालिक-नोकर जकाँ व्यवहार नहि कयल जाइछ ।

8. स्वदेशी

मनुष्य सभ किछु सम्पन्न कऽ सकैवला, सर्वशक्तिमान प्राणी नहि थिक । तेँ ओ अपन पड़ोसीक सेवा कऽ कऽ जगतक सेवा करैत अछि । एहि भावनाक नाम स्वदेशी थिक । अपन लग-पासक लोकक सेवा छोड़ि जे दूर-दराजक लोकक सेवा करबाक हेतु किंवा सेवा लेबाक हेतु दौगैत अछि, से स्वदेशीकेँ भंग करैत अछि । एहि भावनाक पोषणसँ संसार सुव्यवस्थित रहि सकैत अछि । एकर भंग भेने अव्यवस्था रहलैक अछि । एहि नियमक अनुसार जतऽ धरि बनि सकय, हमरालोकनि अपन पड़ोसीक दोकानक संग व्यवहार-व्यापार राखी, देशमे जे चीज बनैत हो किंवा सहजतापूर्वक बनाओल जा सकैत हो, तकरा परदेशसँ नहि लाबी । स्वदेशीमे स्वार्थक हेतु स्थान नहि छैक । मनुष्य दयादवाद ओ जातिक हेतु, जाति शहरक हेतु, शहर देशक हेतु आ देश जगतक कल्याण हेतु जीवनदान देल करय ।

9. अभय

सत्य, अहिंसा आदि व्रतक पालन निर्भयताक बिना असंभव अछि । आइ-काल्हि, जखन कि सर्वत्र भय व्याप्त भऽ रहल अछि, निर्भयताक

चिन्तन ओ तकर शिक्षा अत्यन्त आवश्यक भऽ गेने एकरो व्रतमे स्थान देल गेल अछि । जे मनुष्य सत्यपरायण रहऽ चाहथि, से ने तँ जाति-पातिसँ डेराथि, ने सरकारसँ डेराथि, ने चोरसँ डेराथि, ने निर्धनतासँ डेराथि आ ने मृत्युसँ डेराथि।

10. अस्पृश्यता-निवारण (छूआछूत मेटायब)

हिन्दू धर्म मे छूआछूतक परम्परा जड़ि धऽ लेने अछि । हम मानैत छी जे ओहिमे धर्म नहि छैक अपितु अधर्म छैक । तेँ अस्पृश्यता-निवारणकेँ नियममे स्थान देल गेल अछि । आश्रममे अछूत मानल जायवलाक हेतु दोसर जातियेक लोक जकाँ स्थान छैक ।

आश्रम जाति भेदकेँ नहि मानैत अछि । जातिभेदसँ हिन्दू धर्मकेँ हानि भेलैक अछि, से ओकर मान्यता छैक । ओहिमे व्याप्त ऊँच-नीच आ छूआछूतक भावना अहिंसा-धर्मकेँ नष्ट करऽवला अछि । आश्रम वर्णाश्रम धर्मकेँ मानैत अछि । ओहिमे कहल गेल वर्ण-व्यवस्था कर्मक आधार पर अछि, से बुझना जाइत अछि । तेँ वर्ण-नीति पर चलऽवला मनुष्य माता-पिताक रोजगारसँ रोजी कमा कऽ शेष समय विशुद्ध ज्ञानार्जनमे आ तकरा बढ़यबामे व्यय करथि । स्मृतिक आश्रम-व्यवस्था जगतक भलाइ करऽवला अछि । मुदा वर्णाश्रम-धर्मकेँ मानितो आश्रमक जीवन गीतामे व्याख्यात व्यापक ओ भावना-प्रधान (भावनाशील, जड़ नहि) सन्यासक आदर्शक आधार पर आश्रित अछि, तेँ आश्रममे वर्णभेदकेँ स्थान नहि छैक।

11. सहिष्णुता (सहबाक सामर्थ्य)

आश्रमक ई मानब छैक जे संसारमे आजुक प्रख्यात धर्म सभ सत्यकेँ प्रकट करऽवला अछि । मुदा ओ सभटा अपूर्ण लोकक माध्यमे प्रकट भेल अछि, तेँ सभमे अपूर्णता किंवा असत्यक फेँट-फाँट भऽ गेल छैक । तेँ जहिना हमरालोकनि अपन धर्मकेँ प्रतिष्ठा दैत छियैक, तहिना दोसरोक धर्मकेँ प्रतिष्ठा देबाक चाही । जाहिठाम एहन सहिष्णुता रहत, ताहिठाम एक-दोसराक धर्मक विरोध सम्भवे नहि अछि, आ ने दोसर धर्मावलम्बीकेँ अपन धर्ममे दीक्षित करबाक प्रयत्ने सम्भव अछि, मुदा सभ धर्ममे व्याप्त दोष नष्ट हो, तेहने प्रार्थना आ तेहने भावना सदिखन बनल रहबाक चाही ।



Navajivan Trust
TELE : 7542634 : Press
7540635 : Office
P. O. Navajivan, Ahmedabad-380 014 (India)

Dt.

LETTER OF AUTHORITY

The Navajivan Trust (the Trust) hereby grant Dr. Yoganand Jha, Kabilpur, Laheriasarai, Darbhanga - 846 001 (the Publishers) a non-exclusive licence to translate, publish and sell in Maithili language the book 'Mangal Prabhat' written by Mahatma Gandhi, subject to the undermentioned conditions.

1. The Navajivan Trust Guarantee that they are the owner of the copyright of all the writings of Mahatma Gandhi, both published and unpublished.

2. The Trust grant the Publishers a non-exclusive licence to translate, publish and sell in Maithili language title 'Mangal Prabhat' written by Mahatma Gandhi.

3. The Trust has been paid a lumpsum royalty of Rs.125/- for the first edition of the book.

4. The following words shall be prominently written in the copies of the book : (c) Copyright Navajivan Trust. This book is published by the permission of Navajivan Trust, Ahmedabad - 380 014 (India)

5. The publisher shall print and publish only one edition of 300 copies. The selling price per copy of the book will be tentatively Rs.10/-.

6. The publisher is expected to see to the accuracy and faithfulness of the translation to the original.

7. Five presentation copies shall be given to the Trust immediately on publication

8. The subject matter shall not be used in broadcasting, cinematography, television, serializing, and dramatizing.

9. The licence granted hereby is meant only for the licencee and is non-assignable.

10. The licence will hold good for one edition only.

11. The book shall be published in a reasonable time. If the publication is delayed beyond the stipulated period of one year the Trust reserves the right to withdraw the permission at any time

12. All the rights other than specifically granted herein are retained by the Trust.

13. Rights granted under this letter shall be adjudicated upon in India according to Indian Law. The jurisdiction shall be of the Ahmedabad Court.

Jitendra Desai
-Managing Trustee

Ahmedabad
Dt.1/10/99



Navajivan Trust
P.O. Navajivan, Ahmedabad-380 014 (India)

☎ : (079) 27542634
: (079) 27540635
Fax : (079) 27541329
E-Mail : jtndrnavajivan@hotmail.con

Dt. 12.5.2010

Dr. Yoganand Jha
Bhagwatisthan Marg Kabilpur,
Laheriasarai,
Darbhanga-846001

Dear Sir,

Thank you for your letter dated 02-05-2010 regarding renewal of Non-exclusive licence to translate, publish and sell in Maithili language the book "Mangal Prabhat" written by Mahatma Gandhi. After going through the detail given in your letter we hereby renew the Letter of Authority and allow you to fix the reasonable price considering the cost of book.

Please send the presentation copies of the book on publication.

With regards,

Yours sincerely,
Kapil Rawal
(Kapil Rawal)

Word:PKN 5-3

(कॉभर पृष्ठ 2 सँ लगातार)

–और सभ पैगम्बर (देवदूत) ओ गाँधीजीमे बहुत अन्तर अछि। आन सभ पैगम्बर अपना जातिक रक्षाक हेतु दोसर जातिसँ लड़बामे 'शहीद' भेलाह परन्तु गाँधीजी शहीद भेलाह दोसर जातिक हित करबामे अपन जाति भाइक हाथेँ !

–ईसामसीहकेँ त मरबौलक शासक, सुकरातकेँ विष देल गेल शासक द्वारा परन्तु गाँधीजी, जे अजातशत्रु छलाह, एहन लोकप्रिय नेता एहि तरहेँ मारल जाथि-एहन घटना इतिहास सभमे नहि देखल गेल !

–बम्बैक प्रधानमन्त्री श्रीखेर एक बेर गाँधीजीक अस्वास्थ्य पर आशंका कैलन्हि जे कतहु ई घातक नहि होइन्ह । ताहिपर सर राधाकृष्णन बाजि उठलाह जे–'बापू रोगसँ नहि, की तँ उपवाससँ मरताह वा गोलीसँ !'

–'इन्साइड एशिया'क लेखक गुण्ठर एक ठाम लिखने छथि जे 'भारतमे यदि सशस्त्र क्रान्ति हो ओ कम्युनिस्ट-राज्य स्थापित हो त सर्वप्रथम गाँधीजी 'शूट' कैल जैताह ।'

–गाँधीजीक मृत्युपर सुदूर अमेरिकाक एक आठ वर्षक नेना चिचिया उठल जे 'जँ पेस्तौल-गोलीक आविष्कार नहि भेल रहैत त नीक होइत ।'

-सुरेन्द्रझा 'सुमन'

(स्वदेश, मैथिली मासिक, वर्ष-1, अंक-2, फरवरी 1948, पृ. 73-74 सँ साभार)



मंगल प्रभातक अनुवादक डा. योगानन्दझा मैथिली भाषा-साहित्यक प्रतिबद्ध लेखक छथि । लोकजीवन ओ लोकसाहित्य, आलेख सञ्चयन, मैथिली शाक्त साहित्य, फकीर मोहन सेनापति; लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा; बिहारक लोककथा, मैथिली हनुमान चालीसा, गहबर-गीत, स्नेहलता, मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष, कथा-लोककथा, सीतावतरण प्रबन्धकाव्य, मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली आदि हिनक प्रमुख मौलिक, सम्पादित ओ अनूदित कृति सभ थिकनि । साहित्यकार संसद, समस्तीपुर; हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग; मैथिली प्रवाहिका, रायपुर (छ.ग.) आदिसँ सम्मानित श्रीझाकेँ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक द्वारा 2005क अनुवाद पुरस्कार प्रदान कय समलंकृत कयल गेल छनि ।

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनक नेतृत्व करैत 10 मार्च 1922कऽ राजद्रोहक अभियोगक संग तत्कालीन बृटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कयल गेलाह आ 18 मार्च 1922 सँ लगभग छओ वर्ष धरि यरवदा कारागारमे बन्द कयल गेलाह। पुनः 5 मइ 1930, 4 जनवरी 1931, 21 जुलाइ 1933 आदि तिथि कऽ गिरफ्तार कऽ ई ओही जहलमे राखल गेल छलाह । अपन जहल जीवनमे ई यरवदा जहलकेँ मन्दिरक अभिधान आ प्रतिष्ठा प्रदान करौलनि ।

5 मइ 1930 सँ 14 अक्टूबर 1930 धरिक अपन जहल जीवनक अवधिमे साबरमती आश्रमक कार्यकर्त्तालोकनिकेँ उत्प्रेरित करैत रहबाक हेतु ओ साप्ताहिक पत्राचार करैत रहलाह जकरा सभक क्रमिक वाचन-श्रवण ओ तदनुसार आचरण दिस अनुगमन आश्रमक हेतु कायाकल्प सिद्ध भेल छल । प्रत्येक मंगल दिन प्रार्थनाक बाद गान्धीजी लिखित ई प्रवचन सभ मंगल-प्रभात नामे ख्यात भेल । तकरे ई मातृभाषा मैथिलीमे पुनः प्रस्तुति ।

गान्धी दर्शनक मैथिलीमे अभाव । हमर सत्यक प्रयोग (1981) आ हमर सपनाक भारत (2008)क बाद गान्धी दर्शनक अविकल प्रस्तुतिक दृष्टिऍ ई तेसर महत्वपूर्ण ग्रन्थ थिक।

मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा एवं कोनो देसिल वयनाक श्रीवृद्धिक हेतु अनूदित ग्रन्थक महत्व पर गान्धीजीक वैचारिक प्रगल्भताकेँ हुनक एहि सूक्ति सभमे देखल जा सकैछ-

- हमर मातृभाषामे कतबो त्रुटि किएक नहि हो, हम ओहिसँ ओहिना सटल रहब जेना मायक छातीसँ । वैह हमरा ज्ञानवर्द्धक दूध दऽ सकत।
- मायक दूधक संग जे संस्कार भेटैत छैक आ जे मिट्ठ बोली सुनाइ पड़ैत छैक, ओकरा आ स्कूलक बीच जे सामंजस्य होयबाक चाही से विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा ग्रहण कयला पर टूटि जाइत छैक।
- विदेशी भाषाक माध्यमसँ शिक्षा पयबामे जे बोझ दिमाग पर पड़ैत छैक से असह्य छैक। हमरालोकनिक धियापुता ई बोझ उठा सकैत छथि। मुदा हुनकालोकनिकेँ तकर मूल्य चुकाबऽ पड़ैत छनि। ओ सभ दोसर बोझ उठयबाक योग्य नहि रहि पबैत छथि । एही कारणे हमरालोकनिक अधिकांश स्नातक कामचोर, कमजोर, हतोत्साह, रोगी आ सुच्चा अनुकर्त्ता बनि जाइत छथि। हुनकालोकनिक निरीक्षणक ऊहि, विचारक शक्ति, साहस, धैर्य, ओज, वीर्य, निर्भयता आदि गुण घटि जाइत छनि। परिणामस्वरूप हमरालोकनि नव योजना नहि बना पबैत छी, बनबैत छी तँ पूर्ण नहि कऽ पबैत छी।
- राष्ट्र अपने भाषाक श्रीवृद्धि करथि आ ताहि हेतु अन्य भाषाक भंडार सेहो अपन भाषामे संचित करथि ।